अध्याय १०

श्री चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों से प्रसाद ग्रहण करते हैं

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर ने अपने *अमृत-प्रवाह-भाष्य* में अध्याय दस का सारांश इस प्रकार दिया है : रथयात्रा उत्सव के पूर्व ही सदा की तरह बंगाल के सारे भक्त जन्नाथपुरी के लिए चल पड़े। राघव पण्डित अपने साथ श्री चैतन्य महाप्रभु के लिए नाना प्रकार के पकवान लाये। यह भोजन उनकी बहन दमयन्ती ने बनाया था, जिसे उसने थैलियों (झालि) में बाँध दिया था। इस संचित भोजन सामग्री को सामान्यत: *राघवेर झालि* अर्थात् "राघव की थैलियाँ" के नाम से जाना जाता था। राघव पण्डित के साथ पानिहाटि का एक निवासी मकरध्वज कर आया था, जो राघवेर झालि का हिसाब रखता था।

जिस दिन सारे भक्त जगन्नाथपुरी पहुँचे, उस दिन भगवान् गोविन्द नरेन्द्र सरोवर में जल क्रीड़ा की लीला कर रहे थे। श्री चैतन्य महाप्रभु ने भी अपने भक्तों के साथ जल में इस उत्सव का आनन्द लूटा। पहले की ही तरह श्री चैतन्य महाप्रभु ने गुण्डिचा का मार्जन किया और *जगमोहन परिमुण्डा याउ* सुप्रसिद्ध श्लोक का कीर्तन किया। कीर्तन समाप्त होने पर उन्होंने सभी भक्तों को प्रसाद बाँटा और स्वयं भी कुछ प्रसाद लिया। तब वे गम्भीरा के द्वार पर विश्राम करने के लिए लेट गये। श्री चैतन्य महाप्रभु के निजी सेवक गोविन्द ने किसी कारण से भगवान् के शरीर को लाँघ लिया और वह उनके पैर दबाने लगा। किन्तु गोविन्द उस दिन बाहर न जा सका और प्रसाद न ले सका। गोविन्द के चरित्र से यह सीखा जा सकता है कि कभी-कभी हम भगवान् की

सेवा हेतु अपराध कर सकते हैं, किन्तु वह इन्द्रियतृप्ति के लिए नहीं होता।

श्री चैतन्य महाप्रभु के निजी सेवक गोविन्द ने बंगाल के भक्तों द्वारा उनकी सेवा के लिए दिये गये सारे भोजन को खाने के लिए महाप्रभु को प्रेरित किया। सारे वैष्णव श्री चैतन्य महाप्रभु को अपने-अपने घरों में निमन्त्रित किया करते थे। महाप्रभु ने शिवानन्द सेन के पुत्र चैतन्य दास का निमन्त्रण स्वीकार किया और वहाँ दही-भात खाया।

वन्दे श्री-कृष्ण-चैतन्यं भक्तानुग्रह-कातरम् ।
येन केनापि सन्तुष्टं भक्त-दत्तेन श्रद्धया ॥ १॥

वन्दे श्री-कृष्ण-चैतन्यं भक्तानुग्रह-कातरम् ।
येन केनापि सन्तुष्टं भक्त-दत्तेन श्रद्धया ॥ १॥

वन्दे—मैं अपने सादर प्रणाम अर्पित करता हूँ; **श्री-कृष्ण-चैतन्यम्**—भगवान् श्री चैतन्य महाप्रभु को; **भक्त**—उनके भक्तों को; **अनुग्रह-कातरम्**—अनुकम्पा का प्रदर्शन करने के लिए उत्कण्ठित हैं; **येन केन-अपि**—जिस किसी के द्वारा; **सन्तुष्टम्**—सन्तुष्ट; **भक्त**—उनके भक्तों के द्वारा; **दत्तेन**—समर्पित; **श्रद्धया**—श्रद्धा एवं प्रेम सहित।

अनुवाद

मैं उन श्री चैतन्य महाप्रभु को सादर नमस्कार करता हूँ, जो अपने भक्तों द्वारा श्रद्धा तथा प्रेम से प्रदान की गई किसी भी वस्तु को स्वीकार करके सदैव प्रसन्न होते हैं और उन पर कृपावृष्टि करने के लिए सदैव उद्यत रहते हैं।

जय जय गौरचन्द्र जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥२॥

जय जय गौरचन्द्र जय नित्यानन्द ।
जयाद्वैत-चन्द्र जय गौर-भक्त-वृन्द ॥ २॥

जय जय—जय जयकार हो; **गौरचन्द्र**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **जय**—जय हो; **नित्यानन्द**—श्री नित्यानन्द प्रभु की; **जय**—जय हो; **अद्वैत-चन्द्र**—श्री अद्वैत आचार्य की; **जय**—जय हो; **गौर-भक्त-वृन्द**—भगवान् गौरांग के भक्तों की।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु की जय हो! श्री नित्यानन्द प्रभु की जय हो! श्री अद्वैतचन्द्र की जय हो! श्री चैतन्य महाप्रभु के सारे भक्तों की जय हो!

वर्षान्तरे सब भक्त प्रभुरे देखिते ।
परम-आनन्दे सबे नीलाचल याइते ॥३॥
वर्षान्तरे सब भक्त प्रभुरे देखिते ।
परम-आनन्दे सबे नीलाचल याइते ॥३॥

वर्ष-अन्तरे—दूसरे वर्ष; **सब भक्त**—सारे भक्त; **प्रभुरे देखिते**—श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शनार्थ; **परम-आनन्दे**—परम उल्लास में; **सबे**—वे सभी; **नीलाचल याइते**—जगन्नाथ पुरी, नीलाचल प्रस्थान के निमित्त।

अनुवाद

अगले वर्ष सारे भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु के दर्शन हेतु जगन्नाथपुरी (नीलाचल) जाने के लिए अत्यन्त प्रसन्न थे।

अद्वैताचार्य-गोसाञि——सर्व-अग्र-गण्य ।
आचार्यरत्न, आचार्यनिधि, श्रीवास आदि धन्य ॥४॥
अद्वैताचार्य-गोसाञि——सर्व-अग्र-गण्य ।
आचार्यरत्न, आचार्यनिधि, श्रीवास आदि धन्य ॥४॥

अद्वैत-आचार्य-गोसाञि—श्री अद्वैत आचार्य गोस्वामी; **सर्व**—सभी में; **अग्र**—प्रधान; **गण्य**—गिने जाते हैं; **आचार्यरत्न**—चन्द्रशेखर; **आचार्यनिधि**—पुण्डरीक विद्यानिधि; **श्रीवास**—श्रीवास ठाकुर; **आदि**—इत्यादि; **धन्य**—महिमायुक्त।

अनुवाद

अद्वैत आचार्य गोसांइ ने बंगाल की टोली का नेतृत्व किया। उनके पीछे आचार्यरत्न, आचार्यनिधि, श्रीवास ठाकुर तथा अन्य महिमामंडित भक्त थे।

यद्यपि प्रभुर आज्ञा गौड़े रहिते ।
तथापि नित्यानन्द प्रेमे चलिला देखिते ॥५॥

यद्यपि प्रभुर आज्ञा गौड़े रहिते ।
तथापि नित्यानन्द प्रेमे चलिला देखिते ॥ ५ ॥

यद्यपि—यद्यपि; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **आज्ञा**—आदेश; **गौड़े रहिते**—बंगाल में रहने के लिए; **तथापि**—फिर भी; **नित्यानन्द**—श्री नित्यानन्द प्रभु; **प्रेमे**—प्रेम में; **चलिला**—गये; **देखिते**—दर्शनार्थ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने नित्यानन्द प्रभु को बंगाल में रहने का आदेश दिया था, किन्तु फिर भी प्रेमाविष्ट होने के कारण भगवान् नित्यानन्द भी उनसे मिलने चले गये।

অনুরাগের লক্ষণ এই,—'বিধি' নাহি মানে ।
তাঁর আজ্ঞা ভাঙ্গে তাঁর সঙ্গের কারণে ॥ ৬ ॥

অনুরাগের লক্ষণ এই,—'বিধি' নাহি মানে ।
তাঁর আজ্ঞা ভাঙ্গে তাঁর সঙ্গের কারণে ॥ ৬ ॥

অনুরাগের—सच्चे अनुराग का; **লক্ষণ**—लक्षण; **এই**—यह; **বিধি**—नियम; **নাহি মানে**—की परवाह नहीं करता; **তাঁর**—उनके; **আজ্ঞা**—आदेश का; **ভাঙ্গে**—उल्लंघन करता है; **তাঁর**—उनके; **সঙ্গের**—संग; **কারণে**—के प्रयोजन से।

अनुवाद

निस्सन्देह, यह सच्चे स्नेह का लक्षण ही है कि मनुष्य पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् के आदेश को, विधि-विधानों की परवाह न करते हुए उनसे सान्निध्य प्राप्त करने के लिए तोड़ता है।

রাসে যৈছে ঘর যাইতে গোপীরে আজ্ঞা দিলা ।
তাঁর আজ্ঞা ভাঙ্গি' তাঁর সঙ্গে সে রহিলা ॥ ৭ ॥

রাসে যৈছে ঘর যাইতে গোপীরে আজ্ঞা দিলা ।
তাঁর আজ্ঞা ভাঙ্গি' তাঁর সঙ্গে সে রহিলা ॥ ৭ ॥

রাসে—रास नृत्य के समय; **যৈছে**—जैसे; **ঘর যাইতে**—घर वापस जाने के लिए; **গোপীরে**—गोपीयों को; **আজ্ঞা দিলা**—भगवान् श्रीकृष्ण ने आदेश दिया था; **তাঁর**—उनकी; **আজ্ঞা**—आज्ञा; **ভাঙ্গি'**—का भंग कर; **তাঁর সঙ্গে**—उनके संग में; **সে**—उन्होंने; **রহিলা**—अपने आपको रखा।

अनुवाद

रास नृत्य के समय कृष्ण ने सारी गोपियों से घर लौट जाने के लिए कहा, किन्तु गोपियों ने उनकी आज्ञा की अवहेलना की और वे उनकी संगति पाने के लिए वहीं रुकी रहीं।

আজ্ঞা-পালনে কৃষ্ণের যৈছে পরিতোষ ।
প্রেমে আজ্ঞা ভাঙ্গিলে হয় কোটি-সুখ-পোষ ॥৮॥

আজ্ঞা-পালনে কৃষ্ণের য়ৈছে পরিতোষ ।
প্রেমে আজ্ঞা ভাঙ্গিলে হয় কোটি-সুখ-পোষ ॥৮॥

আজ্ঞা-পালনে—आज्ञापूर्ति में; **কৃষ্ণের**—श्रीकृष्ण का; **য়ৈছে**—जिस प्रकार; **পরিতোষ**—सन्तोष; **প্রেমে**—प्रेम में; **আজ্ঞা ভাঙ্গিলে**—जब कोई आज्ञा का भंग करता है; **হয়**—होता है; **কোটি-সুখ-পোষ**—कोटी गुना अधिक आनन्द।

अनुवाद

यदि कोई कृष्ण की आज्ञा का पालन करता है, तो वे निश्चित रूप से प्रसन्न होते हैं, किन्तु यदि कोई व्यक्ति प्रेमानन्द के कारण उनकी आज्ञा भंग करता है, तो उन्हें करोड़ों गुना सुख प्राप्त होता है।

বাসুদেব-দত্ত, মুরারি-গুপ্ত, গঙ্গাদাস ।
শ্রীমান্সেন, শ্রীমান্পণ্ডিত, অকিঞ্চন কৃষ্ণদাস ॥৯॥
মুরারি, গরুড়-পণ্ডিত, বুদ্ধিমন্ত-খাঁন ।
সঞ্জয়-পুরুষোত্তম, পণ্ডিত-ভগবান্ ॥১০॥
শুক্লাম্বর, নৃসিংহানন্দ আর যত জন ।
সবাই চলিলা, নাম না যায় লিখন ॥১১॥

বাসুদেব-দত্ত, মুরারি-গুপ্ত, গঙ্গাদাস ।
শ্রীমান্ সেন, শ্রীমান্ পণ্ডিত, অকিঞ্চন কৃষ্ণদাস ॥৯॥
মুরারি, গরুড়-পণ্ডিত, বুদ্ধিমন্ত-খাঁন ।
সঞ্জয়-পুরুষোত্তম, পণ্ডিত-ভগবান্ ॥১০॥
শুক্লাম্বর, নৃসিংহানন্দ আর য়ত জন ।
সবাই চলিলা, নাম না য়ায় লিখন ॥১১॥

वासुदेव-दत्त—वासुदेव दत्त; **मुरारि-गुप्त**—मुरारि गुप्त; **गङ्गादास**—गंगादास; **श्रीमान्-सेन**—श्रीमान् सेन; **श्रीमान्-पण्डित**—श्रीमान् पण्डित; **अकिञ्चन कृष्णदास**—अकिंचन कृष्णदास; **मुरारि**—मुरारि गुप्त; **गरुड़-पण्डित**—गरुड़ पण्डित; **बुद्धिमन्त-खाँन**—बुद्धिमन्त खान; **सञ्जय पुरुषोत्तम**—संजय पुरुषोत्तम; **पण्डित-भगवान्**—भगवान् पण्डित; **शुक्लाम्बर**—शुक्लाम्बर; **नृसिंहानन्द**—नृसिंहानन्द; **आर**—तथा; **ग्रत**—और अधिक; **जन**—व्यक्ति; **सबाइ**—सभी; **चलिला**—गये; **नाम**—नामों को; **ना ग्राय लिखन**—लिखना सम्भव नहीं है।

अनुवाद

जगन्नाथपुरी जाने के लिए वासुदेव दत्त, मुरारि गुप्त, गंगादास, श्रीमान् सेन, श्रीमान् पण्डित, अकिंचन कृष्णदास, मुरारि गुप्त, गरुड़ पण्डित, बुद्धिमन्त खान, संजय पुरुषोत्तम, भगवान् पण्डित, शुक्लाम्बर ब्रह्मचारी, नृसिंहानन्द ब्रह्मचारी तथा अन्य कई भक्त साथ हो लिये। उन सबों के नाम गिना पाना असम्भव है।

कुलीन-ग्रामी, खण्ड-वासी मिलिला आसिया ।
शिवानन्द-सेन चलिला सबारे लञा ॥ १२॥

कुलीन-ग्रामी, खण्ड-वासी मिलिला आसिया ।
शिवानन्द-सेन चलिला सबारे लञा ॥ १२॥

कुलीन-ग्रामी—कुलीन ग्राम के निवासी; **खण्ड-वासी**—खण्ड के निवासी; **मिलिला आसिया**—आकर सम्मिलित हुए; **शिवानन्द-सेन**—शिवानन्द सेन; **चलिला**—गये; **सबारे लञा**—उन सबको लेकर।

अनुवाद

कुलीन ग्राम तथा खण्ड के निवासी भी आकर साथ हो लिये। शिवानन्द सेन ने नेतृत्व संभाला और उन सभी की देखभाल करनी प्रारम्भ कर दी।

राघव-पण्डित चले झालि साजाइया ।
दमयन्ती ग्रत द्रव्य दियाछे करिया ॥ १३॥

राघव-पण्डित चले झालि साजाइया ।
दमयन्ती ग्रत द्रव्य दियाछे करिया ॥ १३॥

राघव-पण्डित—राघव पण्डित; **चले**—जाते हैं; **झालि साजाइया**—अपनी भोजन की थैली को तैयार कर; **दमयन्ती**—उनकी बहन; **यत द्रव्य**—समस्त द्रव्य को; **दियाछे करिया**—पकाया एवं तैयार किया।

अनुवाद

राघव पण्डित अपनी बहन दमयन्ती द्वारा तैयार किये गये स्वादिष्ट भोजन से भरे कई थैले लेकर आये।

नाना अपूर्व भक्ष्य-द्रव्य प्रभुर योग्य भोग ।
वत्सरेक प्रभु याहा करेन उपयोग ॥ १४॥

नाना अपूर्व भक्ष्य-द्रव्य प्रभुर योग्य भोग ।
वत्सरेक प्रभु याहा करेन उपयोग ॥ १४॥

नाना—विविध; **अपूर्व**—अनुपम; **भक्ष्य-द्रव्य**—खाद्य सामग्री; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **योग्य भोग**—भक्षण योग्य; **वत्सरेक**—एक वर्ष तक; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **याहा**—जिसका; **करेन उपयोग**—उपयोग करते हैं।

अनुवाद

दमयन्ती ने श्री चैतन्य महाप्रभु के खाने के योग्य नाना प्रकार के अद्वितीय भोजन तैयार किये, जिन्हें महाप्रभु एक वर्ष तक खाते रहे।

आम्र-काशन्दि, आदा-काशन्दि झाल-काशन्दि नाम ।
नेम्बु-आदा आम्र-कोलि विविध विधान ॥ १५॥
आम्सि, आम-खण्ड, तैलाम्र, आम-सत्ता ।
यत्न करि' गुण्डा करि' पुराण सुकुता ॥ १६॥

आम्र-काशन्दि, आदा-काशन्दि झाल-काशन्दि नाम ।
नेम्बु-आदा आम्र-कोलि विविध विधान ॥ १५॥
आम्सि, आम-खण्ड, तैलाम्र, आम-सत्ता ।
यत्न करि' गुण्डा करि' पुराण सुकुता ॥ १६॥

आम्र-काशन्दि—आम्र-काशन्दि; **आदा-काशन्दि**—आदा-काशन्दि; **झाल-काशन्दि**—झाल-काशन्दि; **नाम**—नामक; **नेम्बु-आदा**—निम्बु तथा अदरक से निर्मित एक व्यंजन; **आम्र-कोलि**—आम्र-कोलि; **विविध विधान**—विविध व्यंजन; **आम्सि**—आम्सि;

आम-खण्ड—आम-खण्ड; **तैलाम्र**—सरसों तेल के भीतर आम; **आम-सत्ता**—आम सत्ता; **यत्न करि'**—अत्यधिक सावधानी से; **गुण्डा करि'**—चूर्ण बनाकर; **पुराण सुकुता**—करेले जैसी सूखी और कटु सब्जीयाँ।

अनुवाद

राघव पण्डित के थैलों में जो अचार तथा मसाले थे, उनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं—आम्रकाशन्दि, आदा काशन्दि, झाल काशन्दि, नेम्बु आदा, आम्रकोलि, आम्मि, आमखण्ड, तैलाग्र तथा आमसत्ता। दमयन्ती ने बड़े मनोयोग से सूखी तीती सब्जियों को चूर्ण कर दिया था।

'सुकुता' बलि' अवज्ञा ना करिह चित्ते ।
सुकुताय ये सुख प्रभुर, ताहा नहे पञ्चामृते ॥ १७॥
'सुकुता' बलि' अवज्ञा ना करिह चित्ते ।
सुकुताय ग्रे सुख प्रभुर, ताहा नहे पञ्चामृते ॥ १७॥

सुकुता—सुकुता; **बलि'**—क्योंकि; **अवज्ञा**—उपेक्षा; **ना करिह**—न करो; **चित्ते**—चित्त में; **सुकुताय**—सुकुता से; **ग्रे**—जो; **सुख**—आनन्द; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **ताहा**—वह; **नहे**—नहीं; **पञ्चामृते**—पंचामृत में।

अनुवाद

सुकुता नाम सुनकर अवहेलना न करें, क्योंकि यह तीता व्यंजन है। श्री चैतन्य महाप्रभु को इस सुकुता को खाने में पंचामृत (दूध, चीनी, घी, शहद तथा दही का मिश्रण) के पीने से भी अधिक सुख मिलता था।

भाव-ग्राही महाप्रभु स्नेह-मात्र लय ।
सुकुता पाता काशन्दिते महा-सुख पाय ॥ १८॥
भाव-ग्राही महाप्रभु स्नेह-मात्र लय ।
सुकुता पाता काशन्दिते महा-सुख पाय ॥ १८॥

भाव-ग्राही—जो प्रयोजन को ग्रहण करते हैं; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **स्नेह**—प्रेम; **मात्र**—केवल; **लय**—ग्रहण करते हैं; **सुकुता पाता**—सुकुता के पत्रों में; **काशन्दिते**—काशन्दि में; **महा-सुख**—अधिक आनन्द; **पाय**—प्राप्त करते हैं।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान् हैं, इसलिए वे प्रत्येक वस्तु से भाव ग्रहण कर लेते हैं। उन्होंने अपने प्रति दमयन्ती के स्नेह को स्वीकार किया; इसीलिए उन्हें सुकुता की सूखी तीती पत्तियों तथा काशन्दि (खट्टा मसाला) से भी महान् आनन्द प्राप्त हुआ।

'मनुष्य'-बुद्धि दमयन्ती करे प्रभुर पाय ।
गुरु-भोजने उदरे कभु 'आम' हञा याय ॥ १९॥

'मनुष्य'-बुद्धि दमयन्ती करे प्रभुर पाय ।
गुरु-भोजने उदरे कभु 'आम' हञा याय ॥ १९॥

मनुष्य-बुद्धि—एक सामान्य मनुष्य समझते हुए; **दमयन्ती**—राघव पण्डित की बहन; **करे**—करती है; **प्रभुर पाय**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणों में; **गुरु-भोजने**—अधिक आहार से; **उदरे**—उदर में; **कभु**—कभी; **आम**—आम; **हञा याय**—होता है।

अनुवाद

श्री चैतन्य महप्रभु के प्रति सहज प्रेम होने से दमयन्ती महाप्रभु को सामान्य मनुष्य मानती थी। इसलिए उसने सोचा कि अधिक खाने से महाप्रभु बीमार पड़ जायेंगे और उनके उदर में आँव हो जायेगी।

तात्पर्य

शुद्ध प्रेम के कारण गोलोक वृन्दावन या व्रजभूमि में कृष्ण के भक्त कृष्ण को अपने ही जैसे सामान्य व्यक्ति मानकर प्रेम करते थे। यद्यपि वे कृष्ण को अपने में से ही एक मानते थे, तो भी कृष्ण के प्रति उनके प्रेम की कोई सीमा न थी। इसी तरह अत्यधिक प्रेम के कारण राघव पण्डित तथा उनकी बहन दमयन्ती श्री चैतन्य महाप्रभु को मनुष्य के रूप में समझते थे, किन्तु महाप्रभु के प्रति उनका प्रेम असीम था। अधिक खाने से सामान्य व्यक्ति *अम्लपित्त* रोग का शिकार हो जाता है। यह रोग अपच के कारण उदर में अम्ल उत्पन्न होने से होता है। दमयन्ती ने सोचा कि ऐसी स्थिति से श्री चैतन्य महाप्रभु पीड़ित हो जायेंगे।

সুকুতা খাইলে সেই আম হ-ইবেক নাশ ।
এই স্নেহ মনে ভাবি' প্রভুর উল্লাস ॥২০॥

সুকুতা খাইলে সেই আম হ-ইবেক নাশ ।
এই স্নেহ মনে ভাবি' প্রভুর উল্লাস ॥ ২০ ॥

সুকুতা খাইলে—সুকুতা খাকর; **সেই আম**—বহ আম; **হ-ইবেক নাশ**—নষ্ট হো জায়েগা; **এই**—যহ; **স্নেহ**—প্রেম কা; **মনে**—মন মেঁ; **ভাবি'**—বিচার কর; **প্রভুর**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু কা; **উল্লাস**—সুখ।

অনুবাদ

নিষ্ঠাবান স্নেহ কে কারণ উসনে সোচা কি ইস সুকুতা কো খানে সে মহাপ্রভু কা রোগ ঠীক হো জায়েগা। দময়ন্তী কে ইন স্নেহিল বিচারোঁ কো সোচকর মহাপ্রভু অত্যন্ত প্রসন্ন থে।

প্রিয়েণ সঙ্গ্রথ্য বিপক্ষ-সন্নিধাব্
উপাহিতাং বক্ষসি পীবর-স্তনী ।
স্রজং ন কাচিদ্বিজহৌ জলাবিলাং
বসন্তি হি প্রেম্ণি গুণা ন বস্তুনি ॥২১॥

প্রিয়েণ সঙ্গ্রথ্য বিপক্ষ-সন্নিধাব্
উপাহিতাং বক্ষসি পীবর-স্তনী ।
স্রজং ন কাচিদ্বিজহৌ জলাবিলাং
বসন্তি হি প্রেম্ণি গুণা ন বস্তুনি ॥ ২১ ॥

প্রিয়েণ—প্রিয় কে দ্বারা; **সঙ্গ্রথ্য**—গ্রন্থন করনে কে পশ্চাত্; **বিপক্ষ-সন্নিধৌ**—বিপক্ষী দল কে সমক্ষ; **উপাহিতাম্**—স্থাপিত কিয়া; **বক্ষসি**—বক্ষ স্থল পর; **পীবর-স্তনী**—উন্নত উরোজদ্বয় যুক্ত; **স্রজম্**—মালা; **ন**—নহীঁ; **কাচিত্**—কোই প্রেমী; **বিজহৌ**—উপেক্ষা কী; **জল-আবিলাম্**—ধূলী সে ধূসরিত; **বসন্তি**—নিবাস করতে হৈঁ; **হি**—ক্যোঁকি; **প্রেম্ণি**—প্রেম মেঁ; **গুণাঃ**—গুণ; **ন**—নহীঁ; **বস্তুনি**—ভৌতিক পদার্থোঁ মেঁ।

অনুবাদ

"এক প্রেমী নে মালা গূঁথী ঔর অপনী প্রেমিকা কী সৌতোঁ কী উপস্থিতি মেঁ হী উসকে গলে মেঁ বহ মালা ডাল দী। উসকে স্তন উঠে হুএ থে ঔর বহ অত্যন্ত সুন্দর থী, কিন্তু উসনে উস কীচড় সে সনী মালা কো অস্বীকার

नहीं किया, क्योंकि उसका मूल्य भौतिक वस्तुओं में नहीं अपितु उसमें निहित प्रेम में था।"

तात्पर्य

यह श्लोक भारवी कृत *किरातार्जुनीय* से लिया गया है।

धनिया-मौहरीर तण्डुल गुण्डा करिया ।
नाड़ु बान्धियाछे चिनि-पाक करिया ॥२२॥
धनिया-मौहरीर तण्डुल गुण्डा करिया ।
नाड़ु बान्धियाछे चिनि-पाक करिया ॥ २२ ॥

धनिया—धनिया का; **मौहरीर**—सुवा दानों का; **तण्डुल**—अनाज; **गुण्डा करिया**—चूर्ण बनाकर; **नाड़ु बान्धियाछे**—मोदक में रूपान्तरित कर; **चिनि-पाक करिया**—शर्करा में पकाकर।

अनुवाद

दमयन्ती ने धनिया तथा सौंफ के बीजों को चूर्ण किया, उन्हें चीनी के साथ पकाया और फिर उनसे छोटे-छोटे लड्डू बना दिये।

शुण्ठि-खण्ड नाड़ु, आर आम-पित्त-हर ।
पृथक्पृथकबान्धि' वस्त्रेर कुथली भितर ॥२३॥
शुण्ठि-खण्ड नाड़ु, आर आम-पित्त-हर ।
पृथक् पृथक् बान्धि' वस्त्रेर कुथली भितर ॥ २३ ॥

शुण्ठि-खण्ड नाड़ु—सूखी अदरक से निर्मित मिष्टि मोदक; **आर**—तथा; **आम-पित्त-हर**—जो अत्यधिक पित्त के प्रकोप से होनेवाले आम को हरती है; **पृथक्-पृथक्**—अलग-अलग; **बान्धि'**—बाँधकर; **वस्त्रेर**—कपडे की; **कुथली**—थैलीयों; **भितर**—के भीतर।

अनुवाद

उसने अत्यधिक पित्त से उत्पन्न आँव को दूर करने के लिए सूखी अदरक के साथ मिठाई के लड्डू बनाये। उसने इन सारे पकवानों को अलग-अलग छोटी छोटी कपड़े की थैलियों में भरा।

কোলি-শুণ্ঠি, কোলি-চূর্ণ, কোলি-খণ্ড আর ।
কত নাম ল-ইব, শত-প্রকার 'আচার' ॥২৪॥

কোলি-শুণ্ঠি, কোলি-চূর্ণ, কোলি-খণ্ড আর ।
কত নাম ল-ইব, শত-প্রকার 'আচার' ॥ ২৪॥

কোলি-শুণ্ঠি—সূখী অদরক और बेर; **কোলি-চূর্ণ**—बेर का चूर्ण; **কোলি-খণ্ড**—बेरों से बना एक और व्यंजन; **আর**—और; **কত নাম**—कितने और नाम; **ল-ইব**—मे लूँ; **শত-প্রকার**—सौ प्रकार के; **আচার**—मसाले और अचार।

अनुवाद

उसने सैकड़ों प्रकार के मसाले तथा अचार बनाये। उसने कोलिशुण्ठि, कोलिचूर्ण, कोलिखण्ड तथा अनेक अन्य पकवान भी बनाये। मैं कितनों का नाम गिनाऊँ?

নারিকেল-খণ্ড নাড়ু, আর নাড়ু গঙ্গা-জল ।
চির-স্থায়ী খণ্ড-বিকার করিলা সকল ॥২৫॥

নারিকেল-খণ্ড নাড়ু, আর নাড়ু গঙ্গা-জল ।
চির-স্থায়ী খণ্ড-বিকার করিলা সকল ॥ ২৫॥

নারিকেল-খণ্ড নাড়ু—नारियल के चूर्ण से निर्मित मीठे लड्डू; **আর**—और; **নাড়ু গঙ্গা-জল**—गंगाजल के सदृश धवलवर्णयुक्त मोदक; **চির-স্থায়ী**—लम्बे समय तक स्थिर रहनेवाले; **খণ্ড-বিকার**—शर्करा के मिष्ठान्न के रूप में परिपत; **করিলা**—बनाये; **সকল**—सभी।

अनुवाद

उसने लड्डू जैसी अनेक मिठाइयाँ बनाईं। कुछ चूर्णित नारियल से बनाई गई थीं और दूसरी मिठाइयाँ गंगाजल के समान सफेद दिख रही थीं। इस तरह उसने अनेक प्रकार की टिकाऊ मिश्री की मिठाइयाँ बनाईं।

চির-স্থায়ী ক্ষীর-সার, মণ্ডাদি-বিকার ।
অমৃত-কর্পূর আদি অনেক প্রকার ॥২৬॥

চির-স্থায়ী ক্ষীর-সার, মণ্ডাদি-বিকার ।
অমৃত-কর্পূর আদি অনেক প্রকার ॥ ২৬॥

चिर-स्थायी—लम्बे समय तक टिकनेवाले; **क्षीर-सार**—पनीर; **मण्डादि-विकार**—मण्ड अर्थात् दुग्ध और मलाई से निर्मित विविध मिष्टान्न; **अमृत-कर्पूर**—दूध और कपूर से बने व्यंजन; **आदि**—और अन्य; **अनेक प्रकार**—अनेक प्रकार की।

अनुवाद

उसने लम्बे समय तक टिकनेवाला पनीर, दूध तथा मलाई की अनेक मिठाइयाँ तथा अमृत कर्पूर जैसी कई मिठाइयाँ बनाईं।

शालिकाचुटि-धान्येर 'आतप' चिड़ा करि' ।
नूतन-वस्त्रेर बड़ कुथली सब भरि' ॥२७॥
शालिकाचुटि-धान्येर 'आतप' चिड़ा करि' ।
नूतन-वस्त्रेर बड़ कुथली सब भरि' ॥ २७॥

शालिकाचुटि-धान्येर—एक प्रकार का महीन चावल; **आतप**—रवि रश्मियों में सुखाया गया; **चिड़ा करि'**—पौहें बनाकर; **नूतन-वस्त्रेर**—नवीन वस्त्र की; **बड़ कुथली**—एक बड़ी थैली; **सब**—सब; **भरि'**—भरकर।

अनुवाद

उसने महीन, बिना उबाले शालि धान से चिउड़ा बनाया और उसे नए कपड़े की बनी एक बड़ी थैली में भर दिया।

कतेक चिड़ा हुड़ुम्करि' घृतेते भाजिया ।
चिनि-पाके नाड़ु कैला कर्पूरादि दिया ॥२८॥
कतेक चिड़ा हुड़ुम्करि' घृतेते भाजिया ।
चिनि-पाके नाड़ु कैला कर्पूरादि दिया ॥ २८॥

कतेक चिड़ा—उस पौहें में से किंचित्; **हुड़ुम् करि'**—मुरमुरे बनाकर; **घृतेते भाजिया**—घी में सेंककर; **चिनि-पाके**—चीनी में पकाकर; **नाड़ु कैला**—गोलाकार लड्डू बनाकर; **कर्पूर-आदि दिया**—कपूर और अन्य घटक मिलाकर।

अनुवाद

उसने कुछ चिउड़े को भूनकर घी में तला और चीनी के शीरे में पकाकर कुछ कपूर मिलाकर उसके लड्डू बना लिये।

शालि-धान्येर तण्डुल-भाजा चूर्ण करिया ।
घृत-सिक्त चूर्ण कैला चिनि-पाक दिया ॥२९॥
कर्पूर, मरिच, लवङ्ग, एलाचि, रसवास ।
चूर्ण दिया नाडु कैला परम सुवास ॥३०॥

शालि-धान्येर तण्डुल-भाजा चूर्ण करिया ।
घृत-सिक्त चूर्ण कैला चिनि-पाक दिया ॥ २९ ॥
कर्पूर, मरिच, लवङ्ग, एलाचि, रसवास ।
चूर्ण दिया नाडु कैला परम सुवास ॥ ३० ॥

शालि-धान्येर—उच्च गुणवत्ता वाले चावल का; **तण्डुल**—अनाज; **भाजा**—तला गया; **चूर्ण करिया**—उसको चूर्ण बनाकर; **घृत-सिक्त**—घी में भिगोकर; **चूर्ण**—चूर्ण; **कैला**—बनाया; **चिनि-पाक दिया**—शक्कर के साथ पकाकर; **कर्पूर**—कपूर; **मरिच**—काली-मिर्च; **लवङ्ग**—लौंग; **एलाचि**—इलायची; **रस-वास**—और अन्य मसाले; **चूर्ण**—चूर्ण में; **दिया**—मिश्रित कर; **नाडु**—गोलाकर लड्डू; **कैला**—बनाये; **परम सु-वास**—अत्यधिक सुस्वादिष्ट।

अनुवाद

उसने महीन चावल को भूनकर उसका चूर्ण बनाया और उसे घी से सिक्त करके चीनी के शीरे में पका दिया। तत्पश्चात् उसने कपूर, काली मिर्च, लौंग, इलायची तथा अन्य मसाले डाले और छोटे-छोटे लड्डू बना लिये, जो अत्यन्त स्वादिष्ट तथा सुगन्धित थे।

शालि-धान्येर ख-इ पुनः घृतेते भाजिया ।
चिनि-पाक उख्ड़ा कैला कर्पूरादि दिया ॥३१॥

शालि-धान्येर ख-इ पुनः घृतेते भाजिया ।
चिनि-पाक उख्ड़ा कैला कर्पूरादि दिया ॥ ३१ ॥

शालि-धान्येर ख-इ—अच्छे धान के सूखे हुए चावल; **पुनः**—फिर; **घृतेते भाजिया**—घी में तलकर; **चिनि-पाक**—शक्कर के रस में उबालकर; **उख्ड़ा**—उखडा; **कैला**—बनाया; **कर्पूर-आदि दिया**—कपूर के साथ मिलाकर।

अनुवाद

उसने महीन धान के चावल को भूना, घी में तला, चीनी के शीरे में पकाया और कुछ में कपूर मिलाकर उख्ड़ा या मुड्कि बना लिया।

ফুট্‌কলাই চূর্ণ করি' ঘৃতে ভাজাইল ।
চিনি-পাকে কর্পূরাদি দিয়া নাড়ু কৈল ॥৩২॥

फुट्‌कलाइ चूर्ण करि' घृते भाजाइल ।
चिनि-पाके कर्पूरादि दिया नाड़ु कैल ॥ ३२ ॥

फुट्‌कलाइ—सिके हुए मटर घी में तलकर शक्कर के रस में भिगोना; **चूर्ण करि'**—चूरा बनाकर; **घृते भाजाइल**—घी में तलना; **चिनि-पाके**—शक्कर में पकाना; **कर्पूर-आदि**—कपूर एवं अन्य सामग्री; **दिया**—मिलाकर; **नाड़ु कैल**—गोलाकार मिठाई बनाई।

अनुवाद

एक अन्य प्रकार की मिठाई बनाने के लिए भूने हुए मटर को चूर्ण करके घी में तलकर चीनी में पकाया गया। फिर उसमें कपूर मिलाकर लड्डू बना लिये गये।

কহিতে না জানি নাম এ-জন্মে যাহার ।
ঐছে নানা ভক্ষ্য-দ্রব্য সহস্র-প্রকার ॥৩৩॥

कहिते ना जानि नाम ए-जन्मे ग्राहार ।
ऐछे नाना भक्ष्य-द्रव्य सहस्र-प्रकार ॥ ३३ ॥

कहिते ना जानि—मैं नहीं कह सकता; **नाम**—नाम; **ए-जन्मे**—इस जन्म में; **ग्राहार**—जिनके; **ऐछे**—समान; **नाना**—अनेक; **भक्ष्य-द्रव्य**—खाद्य; **सहस्र-प्रकार**—सैकड़ों एवं हजारों विभिन्न प्रकार के।

अनुवाद

मैं जन्म भर भी गिनाऊँ, तो इन सारे खाद्य पदार्थों का नाम नहीं ले सकूँगा। दमयन्ती ने सैकड़ों हजारों चीजें प्रस्तुत कीं।

রাঘবের আজ্ঞা, আর করেন দময়ন্তী ।
দুঁহার প্রভুতে স্নেহ পরম-ভকতি ॥৩৪॥

राघवेर आज्ञा, आर करेन दमयन्ती ।
दुँहार प्रभुते स्नेह परम-भकति ॥ ३४ ॥

राघवेर आज्ञा—राघव पण्डित की आज्ञा पर; **आर**—एवं; **करेन**—बनाया; **दमयन्ती**—

दमयन्ती; **दुँहार**—दोनों को; **प्रभुते**—श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रति; **स्नेह**—स्नेह; **परम-भकति**—अत्यधिक विकसित भक्ति।

अनुवाद

दमयन्ती ने अपने भाई राघव पण्डित के आदेश से ये सारी चीजें तैयार की थीं। इन दोनों का श्री चैतन्य महाप्रभु के प्रति असीम स्नेह था और वे भक्ति में बहुत उन्नत थे।

गङ्गा-मृत्तिका आनि' वस्त्रेते छानिया ।
पाँपड़ि करिया दिला गन्ध-द्रव्य दिया ॥ ३५ ॥

गङ्गा-मृत्तिका आनि' वस्त्रेते छानिया ।
पाँपड़ि करिया दिला गन्ध-द्रव्य दिया ॥ ३५ ॥

गङ्गा-मृत्तिका—गंगा नदी की मिट्टी; **आनि'**—लाकर; **वस्त्रेते**—कपड़े से; **छानिया**—छानकर; **पाँपड़ि करिया दिला**—छोटे गोलाकार बनाये; **गन्ध-द्रव्य दिया**—सुगन्धित पदार्थों में मिलाकर।

अनुवाद

दमयन्ती ने गंगा की मिट्टी ली, उसे सुखाया, चूर्ण किया, महीन कपड़े से छाना, उसमें सुगन्धित द्रव्य मिलाये और उसके छोटे-छोटे गोले बना लिये।

पातल मृत्पात्रे सन्धानादि भरि' ।
आर सब वस्तु भरे वस्त्रेर कुथली ॥ ३६ ॥

पातल मृत्पात्रे सन्धानादि भरि' ।
आर सब वस्तु भरे वस्त्रेर कुथली ॥ ३६ ॥

पातल—बारीक; **मृत्-पात्रे**—मिट्टी के पात्रों में; **सन्धान-आदि**—मसाले एवं अन्य वस्तु; **भरि'**—भरकर; **आर**—अन्य; **सब**—सब; **वस्तु**—वस्तुएँ; **भरे**—भरे; **वस्त्रेर कुथली**—कपड़े की छोटी थैली।

अनुवाद

मसालों तथा ऐसे ही पदार्थों को मिट्टी के पतले बर्तनों में और शेष सभी वस्तुओं को कपड़े की छोटी-छोटी थैलियों में भरा।

সামান্য ঝালি হৈতে দ্বিগুণ ঝালি কৈলা ।
পারিপাটি করি' সব ঝালি ভরাইলা ॥ ৩৭ ॥

সামান্য ঝালি হৈতে দ্বিগুণ ঝালি কৈলা ।
পারিপাটি করি' সব ঝালি ভরাইলা ॥ ৩৭ ॥

সামান্য—छोटे; **ঝালি**—थैलों; **হৈতে**—से; **দ্বি-গুণ**—दुगने बड़े; **ঝালি**—थैले; **কৈলা**—बनाये; **পারিপাটি করি'**—बड़ी सावधानी से; **সব ঝালি**—सभी थैले; **ভরাইলা**—उसने भरे।

अनुवाद

दमयन्ती ने छोटी थैलियों से दुगने आकार के थैले बनाये और तब बड़ी सावधानी से उसने इन बड़े थैलों में सारी छोटी थैलियाँ भर दीं।

ঝালি বান্ধি' মোহর দিল আগ্রহ করিয়া ।
তিন বোঝারি ঝালি বহে ক্রম করিয়া ॥ ৩৮ ॥

ঝালি বান্ধি' মোহর দিল আগ্রহ করিয়া ।
তিন বোঝারি ঝালি বহে ক্রম করিয়া ॥ ৩৮ ॥

ঝালি বান্ধি'—थैलों को बाँधकर; **মোহর দিল**—उसने बन्द किया; **আগ্রহ করিয়া**—बहुत ध्यानपूर्वक; **তিন বোঝারি**—तीन वाहक; **ঝালি বহে**—थैलों को उठाया; **ক্রম করিয়া**—एक के बाद एक।

अनुवाद

तब उसने सारे थैलों को लपेटकर हर थैले को ध्यानपूर্वक बन्द कर दिया। इन थैलों को तीन वाहक क्रमानुसार वहन करके ले गये।

সঙ্ক্ষেপে কহিলুঁ এই ঝালির বিচার ।
'রাঘবের ঝালি' বলি' বিখ্যাতি যাহার ॥ ৩৯ ॥

সঙ্ক্ষেপে কহিলুঁ এই ঝালির বিচার ।
'রাঘবের ঝালি' বলি' বিখ্যাতি যাহার ॥ ৩৯ ॥

সঙ্ক্ষেপে—संक्षेप में; **কহিলুঁ**—मैंने बताया; **এই ঝালির**—इन थैलों के बारे में; **বিচার**—वर्णन; **রাঘবের ঝালি**—राघव के थैले; **বলি'**—से; **বিখ্যাতি**—प्रसिद्ध; **যাহার**—जिनका।

अनुवाद

इस तरह मैंने संक्षेप में उन थैलों का वर्णन किया, जो 'राघव की झालि' नाम से प्रसिद्ध हैं।

ঝালির উপর 'মুন্সিব' মকরধ্বজ-কর ।
প্রাণ-রূপে ঝালি রাখে হঞা তৎপর ॥৪০॥

झालिर उपर 'मुन्सिब' मकरध्वज-कर ।
प्राण-रूपे झालि राखे हञा तत्पर ॥ ४० ॥

झालिर उपर—थैलों पर; **मुन्सिब**—निरीक्षक; **मकरध्वज-कर**—मकरध्वज कर; **प्राण-रूपे**—अपने प्राणों के समान; **झालि राखे**—थैलों को रखा; **हञा तत्पर**—बहुत ध्यानपूर्वक।

अनुवाद

इन सारे थैलों का निरीक्षक मकरध्वज-कर था, जो इन्हें अपने प्राणों के समान ध्यानपूर्वक रखता था।

এই-মতে বৈষ্ণব সব নীলাচলে আইলা ।
দৈবে জগন্নাথের সে দিন জল-লীলা ॥৪১॥

एइ-मते वैष्णव सब नीलाचले आइला ।
दैवे जगन्नाथेर से दिन जल-लीला ॥ ४१ ॥

एइ-मते—इस प्रकार; **वैष्णव सब**—सभी वैष्णव; **नीलाचले आइला**—नीलाचल आये; **दैवे**—संयोग से; **जगन्नाथेर**—जगन्नाथ भगवान् की ; **से दिन**—उस दिन; **जल-लीला**—जल-लीला।

अनुवाद

इस तरह बंगाल के सारे वैष्णव जन जगन्नाथपुरी गये। संयोगवश वे उस दिन पहुँचे थे, जिस दिन भगवान् जगन्नाथ जल-लीला करते हैं।

নরেন্দ্রের জলে 'গোবিন্দ' নৌকাতে চড়িয়া ।
জল-ক্রীড়া করে সব ভক্ত-গণ লঞা ॥৪২॥

नरेन्द्रेर जले 'गोविन्द' नौकाते चड़िया ।
जल-क्रीड़ा करे सब भक्त-गण लञा ॥ ४२ ॥

नरेन्द्रेर जले—नरेन्द्र नामक सरोवर के जल पर; **गोविन्द**—गोविन्द; **नौकाते चड़िया**—नौका पर चढकर; **जल-क्रीड़ा करे**—जल-लीला प्रदर्शित कर रहे थे; **सब भक्त-गण**—सभी भक्त; **लञा**—लेकर।

अनुवाद

नरेन्द्र सरोवर के जल में नाव पर आरूढ़ होकर भगवान् गोविन्द ने अपने सारे भक्तों के साथ जल-लीला की।

सेई-काले महाप्रभु भक्त-गण-सङ्गे ।
नरेन्द्रे आइला देखिते जल-केलि-रङ्गे ॥ ४३॥

सेइ-काले महाप्रभु भक्त-गण-सङ्गे ।
नरेन्द्रे आइला देखिते जल-केलि-रङ्गे ॥ ४३॥

सेइ-काले—उस समय; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भक्त-गण-सङ्गे**—अपने भक्तों के साथ; **नरेन्द्रे आइला**—नरेन्द्र सरोवर आये; **देखिते**—देखने के लिए; **जल-केलि**—जल-क्रीड़ा; **रङ्गे**—भारी उल्लासपूर्वक।

अनुवाद

तब नरेन्द्र सरोवर में भगवान् जगन्नाथ की आनन्दमय जल-क्रीड़ा देखने के लिए अपने निजी संगियों सहित श्री चैतन्य महाप्रभु आये।

सेई-काले आइला सब गौड़ेर भक्त-गण ।
नरेन्द्रेते प्रभु-सङ्गे ह-इल मिलन ॥ ४४॥

सेइ-काले आइला सब गौड़ेर भक्त-गण ।
नरेन्द्रेते प्रभु-सङ्गे ह-इल मिलन ॥ ४४॥

सेइ-काले—उसी समय; **आइला**—आये; **सब**—सभी; **गौड़ेर भक्त-गण**—बंगाल से भक्त; **नरेन्द्रेते**—नरेन्द्र सरोवर के पास; **प्रभु-सङ्गे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के संग; **ह-इल मिलन**—भेंट हुई।

अनुवाद

उसी समय बंगाल के सारे भक्त उस सरोवर में पहुँचे और महाप्रभु से मिले।

ভক্ত-গণ পড়ে আসি' প্রভুর চরণে ।
উঠাঞা প্রভু সবারে কৈলা আলিঙ্গনে ॥ ৪৫ ॥

ভক্ত-গণ পড়ে আসি' প্রভুর চরণে ।
উঠাঞা প্রভু সবারে কৈলা আলিঙ্গনে ॥ ৪৫ ॥

ভক্ত-গণ—भक्त; **পড়ে**—गिर पडे; **আসি'**—आकर; **প্রভুর চরণে**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों पर; **উঠাঞা**—उन्हें उठाया; **প্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **সবারে**—उन सब को; **কৈলা আলিঙ্গনে**—आलिंगन किया।

अनुवाद

सारे भक्त तुरन्त ही श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणों पर गिर पड़े और महाप्रभु ने प्रत्येक को उठाकर सभी का आलिंगन किया।

গৌড়ীয়া-সম্প্রদায় সব করেন কীর্তন ।
প্রভুর মিলনে উঠে প্রেমের ক্রন্দন ॥ ৪৬ ॥

গৌড়ীয়া-সম্প্রদায় সব করেন কীর্তন ।
প্রভুর মিলনে উঠে প্রেমের ক্রন্দন ॥ ৪৬ ॥

গৌড়ীয়া-সম্প্রদায়—बंगाल के वैष्णव गण (गौड़िय सम्प्रदाय); **সব**—सभी; **করেন কীর্তন**—सामूहिक कीर्तन किया; **প্রভুর মিলনে**—श्री चैतन्य महाप्रभु से मिलने पर; **উঠে**—उठे; **প্রেমের ক্রন্দন**—भावातिरेक प्रेम में रो पडे।

अनुवाद

बंगाल के सारे भक्तों से युक्त गौड़ीय सम्प्रदाय ने संकीर्तन प्रारम्भ किया। जब वे महाप्रभु से मिले, तो वे प्रेमवश उच्च स्वर से क्रन्दन करने लगे।

জল-ক্রীড়া, বাদ্য, গীত, নর্তন, কীর্তন ।
মহা-কোলাহল তীরে, সলিলে খেলন ॥ ৪৭ ॥

জল-ক্রীড়া, বাদ্য, গীত, নর্তন, কীর্তন ।
মহা-কোলাহল তীরে, সলিলে খেলন ॥ ৪৭ ॥

জল-ক্রীড়া—जल-लीला; **বাদ্য**—सुरीला कंपन; **গীত**—गाना; **নর্তন**—नृत्य करना; **কীর্তন**—कीर्तन करना; **মহা-কোলাহল**—अत्यधिक कोलाहल; **তীরে**—तट पर; **সলিলে**—जल में; **খেলন**—खेल।

अनुवाद

जल-क्रीड़ा के कारण किनारे पर वाद्य, गायन, कीर्तन, नर्तन तथा अत्यधिक कोलाहल के होने से अत्यधिक उल्लास था।

गौड़ीया-सङ्कीर्तने आर रोदन मिलिया ।
महा-कोलाहल हैल ब्रह्माण्ड भरिया ॥ ४८ ॥

गौड़ीया-सङ्कीर्तने आर रोदन मिलिया ।
महा-कोलाहल हैल ब्रह्माण्ड भरिया ॥ ४८ ॥

गौड़ीया-सङ्कीर्तने—गौड़िय वैष्णवों द्वारा संकीर्तन; **आर**—एवं; **रोदन**—रुदन; **मिलिया**—मिलकर; **महा-कोलाहल**—महान् कोलाहल; **हैल**—हुआ; **ब्रह्माण्ड**—ब्रह्माण्ड; **भरिया**—भर गया।

अनुवाद

गौड़ीय वैष्णवों के कीर्तन तथा क्रन्दन से महान् कोलाहल उत्पन्न हुआ, जिसने समूचे ब्रह्माण्ड को पूरित कर दिया।

सब भक्त लञा प्रभु नामिलेन जले ।
सबा लञा जल-क्रीड़ा करेन कुतूहले ॥ ४९ ॥

सब भक्त लञा प्रभु नामिलेन जले ।
सबा लञा जल-क्रीड़ा करेन कुतूहले ॥ ४९ ॥

सब भक्त—सभी भक्त; **लञा**—लेकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **नामिलेन जले**—जल में उतरे; **सबा लञा**—उन सभी को लेकर; **जल-क्रीड़ा**—जल-क्रीड़ा; **करेन**—प्रदर्शित की; **कुतूहले**—अत्यन्त उल्लासपूर्वक।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने भक्तों के साथ जल में प्रवेश किया और अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक वे उनके साथ जल-क्रीड़ा करने लगे।

प्रभुर एइ जल-क्रीड़ा दास-वृन्दावन ।
'चैतन्य-मङ्गले' विस्तारि' करियाछेन वर्णन ॥ ५० ॥

प्रभुर एइ जल-क्रीड़ा दास-वृन्दावन ।
'चैतन्य-मङ्गले' विस्तारि' करियाछेन वर्णन ॥५०॥

प्रभुर—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **एइ**—इन; **जल-क्रीड़ा**—जल-क्रीड़ा; **दास-वृन्दावन**—वृन्दावन दास ठाकुर; **चैतन्य-मङ्गले**—उनकी पुस्तक 'चैतन्य मंगल' में, जिसे अब चैतन्य भागवत कहा जाता है; **विस्तारि'**—विस्तारपूर्वक वर्णन; **करियाछेन वर्णन**—किया है।

अनुवाद

वृन्दावन दास ठाकुर ने 'चैतन्य मंगल' (अब चैतन्य भागवत नाम से विख्यात) में महाप्रभु की जल-क्रीड़ा का बहुत विस्तार से वर्णन किया है।

पुनः इहाँ वर्णिले पुनरुक्ति हय ।
व्यर्थ लिखन हय, आर ग्रन्थ बाड़य ॥५१॥
पुनः इहाँ वर्णिले पुनरुक्ति हय ।
व्यर्थ लिखन हय, आर ग्रन्थ बाड़य ॥५१॥

पुनः—पुनः; **इहाँ**—यहाँ; **वर्णिले**—मैं वर्णन करूँ तो; **पुनः-उक्ति हय**—पुनरुक्ति होगी; **व्यर्थ**—व्यर्थ; **लिखन**—लिखना; **हय**—है; **आर**—एवं; **ग्रन्थ बाड़य**—पुस्तक का आकार बढ़ जायेगा।

अनुवाद

यहाँ पर महाप्रभु के कार्यकलापों का फिर से वर्णन करने से कोई लाभ नहीं होगा। यह केवल पुनरुक्ति होगी और इससे पुस्तक का आकार बढ़ जायेगा।

जल-लीला करि' गोविन्द चलिला आलय ।
निज-गण लञा प्रभु गेला देवालय ॥५२॥
जल-लीला करि' गोविन्द चलिला आलय ।
निज-गण लञा प्रभु गेला देवालय ॥५२॥

जल-लीला करि'—जल-लीला समाप्त करके; **गोविन्द**—भगवान् जगन्नाथ अपने गोविन्द के चलते-फिरते रूप में; **चलिला आलय**—अपने स्थान पर लौट गये; **निज-गण**—

उनके भक्त; **लञा**—लेते हुए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **गेला**—गये; **देव-आलय**—मन्दिर में।

अनुवाद

जल-लीला समाप्त करने के बाद भगवान् गोविन्द अपने आवास लौट गये। तब श्री चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों को साथ लेकर मन्दिर गये।

तात्पर्य

यहाँ जिस अर्चाविग्रह को गोविन्द कहा गया है, वह जगन्नाथ मन्दिर का विजय विग्रह है। जब भी जगन्नाथजी को कहीं ले जाना होता है, तो विजय विग्रह ही ले जाये जाते हैं, क्योंकि जगन्नाथजी का शरीर बहुत भारी है। जगन्नाथ मन्दिर में विजय विग्रह को गोविन्द कहा जाता है। नरेन्द्र सरोवर में लीला हेतु जगन्नाथजी को ले जाने के बदले विजय विग्रह को ले जाया गया था।

জগন্নাথ দেখি' পুনঃ নিজ-ঘরে আইলা ।
প্রসাদ আনাঞা ভক্ত-গণে খাওয়াইলা ॥৫৩॥

জগন্নাথ দেখি' পুনঃ নিজ-ঘরে আইলা ।
প্রসাদ আনাঞা ভক্ত-গণে খাওয়াইলা ॥৫৩॥

जगन्नाथ देखि'—जगन्नाथ भगवान् के दर्शन करके; **पुनः**—पुनः; **निज-घरे**—अपने निवासस्थान; **आइला**—लौटे; **प्रसाद**—प्रसाद; **आनाञा**—मँगवाया; **भक्त-गणे खाओयाइला**—भक्तों को सेवन करवाया।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु जगन्नाथ मन्दिर होकर अपने निवासस्थान लौट आये, तो उन्होंने पर्याप्त मात्रा में जगन्नाथ जी का प्रसाद मँगवाया, जिसे उन्होंने अपने भक्तों में बाँट दिया, जिससे कि वे भरपेट खा सकें।

ইষ্ট-গোষ্ঠী সবা লঞা কত-ক্ষণ কৈলা ।
নিজ নিজ পূর্ব-বাসায় সবায় পাঠাইলা ॥৫৪॥

ইষ্ট-গোষ্ঠী সবা লঞা কত-ক্ষণ কৈলা ।
নিজ নিজ পূর্ব-বাসায় সবায় পাঠাইলা ॥৫৪॥

इष्ट-गोष्ठी—आध्यात्मिक विषयों पर चर्चा; **सबा लञा**—सभी भक्तों को लेकर; **कत-क्षण**—कुछ समय तक; **कैला**—किया; **निज निज**—अपने अपने; **पूर्व-वासाय**—पूर्व निवासस्थान; **सबाय**—सभी को; **पाठाइला**—उन्होंने भिजवाया।

अनुवाद

भक्तों से कुछ समय तक बातें करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन सबों से अपने-अपने उन्हीं डेरों में स्थान ग्रहण करने के लिए कहा, जिनमें वे पिछले वर्ष रह चुके थे।

গোবিন্দ-ঠাঞি রাঘব ঝালি সমর্পিলা ।
ভোজন-গৃহের কোণে ঝালি গোবিন্দ রাখিলা ॥৫৫॥

গোবিন্দ-ঠাঞি রাঘব ঝালি সমর্পিলা ।
ভোজন-গৃহের কোণে ঝালি গোবিন্দ রাখিলা ॥৫৫॥

गोविन्द-ठाञि—गोविन्द को सौंपा; **राघव**—राघव पण्डित; **झालि**—झालि, खाद्य पदार्थों के थैले; **समर्पिला**—पहुँचाए; **भोजन-गृहेर**—भोजन कक्ष के; **कोणे**—कोने में; **झालि**—थैले; **गोविन्द**—गोविन्द; **राखिला**—रखा।

अनुवाद

राघव पण्डित ने खाद्य सामग्री के थैले गोविन्द को सौंप दिये, जिसने उन्हें भोजन-कक्ष के एक कोने में रख दिये।

পূর্ব-বত্সরের ঝালি আজাড় করিয়া ।
দ্রব্য ভরিবারে রাখে অন্য গৃহে লঞা ॥৫৬॥

পূর্ব-বত্সরের ঝালি আজাড় করিয়া ।
দ্রব্য ভরিবারে রাখে অন্য গৃহে লঞা ॥৫৬॥

पूर्व-वत्सरेर झालि आजाड़ करिया ।
द्रव्य भरिबारे राखे अन्य गृहे लञा ॥५६॥

पूर्व-वत्सरेर—पूर्व वर्ष के; **झालि**—थैले; **आजाड़ करिया**—खाली किये; **द्रव्य भरिबारे**—वस्तुओं से भरकर; **राखे**—रखे; **अन्य गृहे**—दूसरे कमरे में; **लञा**—लेकर।

अनुवाद

गोविन्द ने पिछले वर्ष के थैलों को ठीक से खाली किया और उन्हें अन्य कमरे में दूसरी वस्तुओं से भरे जाने के लिए रख लिया।

আর দিন মহাপ্রভু নিজ-গণ লঞা ।
জগন্নাথ দেখিলেন শয়্যোত্থানে যাঞা ॥৫৭॥

आर दिन महाप्रभु निज-गण लञा ।
जगन्नाथ देखिलेन शय्योत्थाने य्राञा ॥५७॥

आर दिन—अगले दिन; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **निज-गण लञा**—अपने निजी भक्तों के साथ; **जगन्नाथ देखिलेन**—भगवान् जगन्नाथ के दर्शन करने; **शय्या-उत्थाने**—प्रातः काल में जगने के समय; **य्राञा**—गये।

अनुवाद

अगले दिन भगवान् जगन्नाथ के प्रातःकाल जगने के समय पर श्री चैतन्य महाप्रभु अपने निजी भक्तों के साथ भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने गये।

বেড়া-সঙ্কীর্তন তহাঁ আরম্ভ করিলা ।
সাত-সম্প্রদায় তবে গাইতে লাগিলা ॥৫৮॥

बेड़ा-सङ्कीर्तन तहाँ आरम्भ करिला ।
सात-सम्प्रदाय तबे गाइते लागिला ॥५८॥

बेड़ा-सङ्कीर्तन—गोलाकार संकीर्तन; **ताहाँ**—वहाँ पर; **आरम्भ करिला**—प्रारम्भ किया; **सात-सम्प्रदाय**—सात टोलियाँ; **तबे**—तब; **गाइते लागिला**—कीर्तन करने लगीं।

अनुवाद

भगवान् जगन्नाथ का दर्शन करने के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने बेड़ा संकीर्तन (गोलाकार संकीर्तन) प्रारम्भ किया। उन्होंने सात टोलियाँ बनाईं और वे कीर्तन करने लगीं।

तात्पर्य

बेड़ा सङ्कीर्तन की व्याख्या के लिए देखें मध्यलीला ११.२१५-२३८।

সাত-সম্প্রদায়ে নৃত্য করে সাত জন ।
অদ্বৈত আচার্য, আর প্রভু-নিত্যানন্দ ॥৫৯॥

सात-सम्प्रदाये नृत्य करे सात जन ।
अद्वैत आचार्य्य, आर प्रभु-नित्यानन्द ॥५९॥

सात-सम्प्रदाये—सात टोलियों में; **नृत्य करे**—नृत्य करने वाले; **सात जन**—सात व्यक्ति; **अद्वैत आचार्य्य**—अद्वैत आचार्य; **आर**—तथा; **प्रभु-नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु।

अनुवाद

सातों टोलियों में से हर एक में अद्वैत आचार्य अथवा नित्यानन्द प्रभु जैसा मुख्य नर्तक था।

বক্রেশ্বর, অচ্যুতানন্দ, পণ্ডিত-শ্রীবাস ।
সত্যরাজ-খাঁন, আর নরহরি-দাস ॥৬০॥

वक्रेश्वर, अच्युतानन्द, पण्डित-श्रीवास ।
सत्यराज-खाँन, आर नरहरि-दास ॥६०॥

वक्रेश्वर—वक्रेश्वर; **अच्युतानन्द**—अच्युतानन्द; **पण्डित-श्रीवास**—श्रीवास पण्डित; **सत्यराज-खाँन**—सत्यराज खान; **आर**—तथा; **नरहरि-दास**—नरहरि दास।

अनुवाद

अन्य टोलियों के नर्तक थे—वक्रेश्वर पण्डित, अच्युतानन्द, पण्डित श्रीवास, सत्यराज खान तथा नरहरि दास।

সাত-সম্প্রদায়ে প্রভু করেন ভ্রমণ ।
'মোর সম্প্রদায়ে প্রভু'—ঐছে সবার মন ॥৬১॥

सात-सम्प्रदाये प्रभु करेन भ्रमण ।
'मोर सम्प्रदाये प्रभु'—ऐछे सबार मन ॥६१॥

सात-सम्प्रदाये—सात टोलियों में; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करेन भ्रमण**—फिरे; **मोर सम्प्रदाये प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु हमारी टोली में हैं; **ऐछे**—इस प्रकार; **सबार मन**—हर एक व्यक्ति सोच रहा था।

अनुवाद

जब श्री चैतन्य महाप्रभु निरीक्षण करते हुए एक टोली से दूसरी में विचरण करते, तो प्रत्येक टोली के व्यक्ति यही सोचते कि, "महाप्रभु हमारी टोली में हैं।"

সঙ্কীর্তন-কোলাহলে আকাশ ভেদিল ।
সব জগন্নাথ-বাসী দেখিতে আইল ॥৬২॥

সঙ্কীর্তন-কোলাহলে আকাশ ভেদিল ।
সব জগন্নাথ-বাসী দেখিতে আইল ॥৬২॥

সঙ্কীর্তন-কোলাহলে—कोलाहल रूप से संकीर्तन गरजना; **আকাশ ভেদিল**—आकाश भर गया; **সব**—सभी; **জগন্নাথ-বাসী**—जगन्नाथ पुरी के निवासी; **দেখিতে আইল**—देखने आये।

अनुवाद

सामूहिक कीर्तन से इतनी तुमुल ध्वनि हुई कि उससे आकाश भर गया। जगन्नाथपुरी के सारे निवासी कीर्तन देखने के लिए आये।

রাজা আসি' দূরে দেখে নিজ-গণ লঞা ।
রাজ-পত্নী সব দেখে অট্টালী চড়িয়া ॥৬৩॥

রাজা আসি' দূরে দেখে নিজ-গণ লঞা ।
রাজ-পত্নী সব দেখে অট্টালী চড়িয়া ॥৬৩॥

রাজা—राजा; **আসি'**—आया; **দূরে**—दूर से; **দেখে**—देखे; **নিজ-গণ লঞা**—अपने व्यक्तिगत कर्मचारीयों के संग; **রাজ-পত্নী**—रानियाँ; **সব**—सभी; **দেখে**—देखने; **অট্টালী চড়িয়া**—महल के ऊपरी स्थानों से।

अनुवाद

राजा भी अपने निजी सहायकों समेत वहाँ आया और दूर से देखता रहा। सारी रानियों ने महल की अटारियों से देखा।

কীর্তন-আটোপে পৃথিবী করে টলমল ।
'হরি-ধ্বনি' করে লোক, হৈল কোলাহল ॥৬৪॥

কীর্তন-আটোপে পৃথিবী করে টলমল ।
'হরি-ধ্বনি' করে লোক, হৈল কোলাহল ॥৬৪॥

কীর্তন-আটোপে—संकीर्तन की महान गूँज से; **পৃথিবী**—समस्त जगत्; **করে টলমল**—काँप उठा; **হরি-ধ্বনি করে**—हरिनाम संकीर्तन; **লোক**—सामान्य लोग; **হৈল**—हुई; **কোলাহল**—उत्तेजित करनेवाली गूँज।

अनुवाद

कीर्तन की तेज ध्वनि से समस्त जगत् काँपने लगा। जब सबों ने हरिनाम का कीर्तन किया, तो उससे तुमुल ध्वनि उत्पन्न हुई।

এই-মত কত-ক্ষণ করাইলা কীর্তন ।
আপনে নাচিতে তবে প্রভুর হৈল মন ॥৬৫॥

এइ-मत कत-क्षण कराइला कीर्तन ।
आपने नाचिते तबे प्रभुर हैल मन ॥ ६५ ॥

एइ-मत—इस प्रकार; **कत-क्षण**—कुछ समय तक; **कराइला कीर्तन**—संकीर्तन करवाया; **आपने**—स्वयं; **नाचिते**—नृत्य करना; **तबे**—फिर; **प्रभुर हैल मन**—श्री चैतन्य महाप्रभु इच्छुक हुए।

अनुवाद

इस तरह महाप्रभु ने कुछ देर तक तो कीर्तन करवाया, किन्तु तब उन्हें स्वयं नृत्य करने की इच्छा हुई।

সাত-দিকে সাত-সম্প্রদায় গায়, বাজায় ।
মধ্যে মহা-প্রেমাবেশে নাচে গৌর-রায় ॥৬৬॥

सात-दिके सात-सम्प्रदाय गाय, बाजाय ।
मध्ये महा-प्रेमावेशे नाचे गौर-राय ॥ ६६ ॥

सात-दिके—सातों दिशाओं में; **सात-सम्प्रदाय**—सात टोलियाँ; **गाय**—कीर्तन; **बाजाय**—मृदंग बजाना; **मध्ये**—मध्य भाग में; **महा-प्रेमावेशे**—श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम में भावविभोर होकर; **नाचे**—नृत्य किया; **गौर-राय**—श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

सातों टोलियाँ सात दिशाओं में कीर्तन करने लगीं तथा मृदंग बजाने लगीं और श्री चैतन्य महाप्रभु बीचों-बीच अत्यधिक प्रेमावेश में नृत्य करने लगे।

উড়িয়া-পদ মহাপ্রভুর মনে স্মৃতি হৈল ।
স্বরূপেরে সেই পদ গাইতে আজ্ঞা দিল ॥৬৭॥

उड़िया-पद महाप्रभुर मने स्मृति हैल ।
स्वरूपेरे सेइ पद गाइते आज्ञा दिल ॥ ६७॥

उड़िया-पद—उड़िसी गीत का वाक्य; **महाप्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **मने**—मन में; **स्मृति हैल**—स्मरण हुआ; **स्वरूपेरे**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी को; **सेइ पद**—वह खास वाक्य; **गाइते**—गाने की; **आज्ञा दिल**—आज्ञा दी।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु को उड़िया भाषा की एक पंक्ति याद आई और उन्होंने इसे स्वरूप दामोदर को गाने का आदेश दिया।

"জগমোহন-পরি-মুণ্ডা যাউ" ॥ ৬৮॥

"जगमोहन-परि-मुण्डा य़ाउ" ॥ ६८॥

जगमोहन—जगमोहन नामक कीर्तन कक्ष; **परि**—में; **मुण्डा**—मेरा मस्तक; **य़ाउ**—अर्पण हो।

अनुवाद

"जगमोहन नामक कीर्तन कक्ष में मेरा सिर जगन्नाथ के चरणों पर गिरे।"

এই পদে নৃত্য করেন পরম-আবেশে ।
সব-লোক চৌদিকে প্রভুর প্রেম-জলে ভাসে ॥ ৬৯॥

एइ पदे नृत्य करेन परम-आवेशे ।
सब-लोक चौदिके प्रभुर प्रेम-जले भासे ॥ ६९॥

एइ पदे—इस वाक्य से; **नृत्य करेन**—नृत्य करे; **परम-आवेशे**—अत्यधिक प्रेम से भावविभोर होकर; **सब-लोक**—सब लोग; **चौ-दिके**—चारों दिशाओं में; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **प्रेम-जले**—प्रेम भरे अश्रु; **भासे**—तैरना।

अनुवाद

केवल इस पंक्ति के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु बड़े प्रेमावेश में नृत्य कर रहे थे। उनके चारों ओर के लोग उनके आँसुओं के जल में तैरने लगे।

'बोल्' 'बोल्' बलेन प्रभु श्री-बाहु तुलिया ।
हरि-ध्वनि करे लोक आनन्दे भासिया ॥७०॥

'बोल्' 'बोल्' बलेन प्रभु श्री-बाहु तुलिया ।
हरि-ध्वनि करे लोक आनन्दे भासिया ॥७०॥

बोल्—गाओ; **बोल्**—गाओ; **बलेन**—कहा; **प्रभु**—भगवान् ने (प्रभु ने); **श्री-बाहु**—उनके दिव्य बाहु; **तुलिया**—उठाकर; **हरि-ध्वनि करे**—हरि का पवित्र नाम गाया; **लोक**—लोग; **आनन्दे भासिया**—परमानन्द में तैरते हुए।

अनुवाद

दिव्य आनन्द में तैरते हुए महाप्रभु ने अपनी दोनों बाहें उठाते हुए कहा, "कीर्तन करो! कीर्तन करो'!" दिव्य आनन्द में तैरते हुए लोग हरिनाम का कीर्तन करके प्रत्युत्तर देने लगे।

प्रभु पड़ि' मूर्छा याय, श्वास नाहि आर ।
आचम्बिते उठे प्रभु करिया हुङ्कार ॥७१॥

प्रभु पड़ि' मूर्छा याय, श्वास नाहि आर ।
आचम्बिते उठे प्रभु करिया हुङ्कार ॥७१॥

प्रभु—प्रभु; **पड़ि'**—गिरे; **मूर्छा याय**—बेहोश होकर; **श्वास नाहि**—श्वास बन्द होकर; **आर**—एवं; **आचम्बिते**—सहसा; **उठे**—उठे; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करिया हुङ्कार**—ऊँचे स्वर से।

अनुवाद

महाप्रभु मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़े और उनकी श्वास भी नहीं चल रही थी। किन्तु वे सहसा उच्च ध्वनि (हुंकार) करते उठ खड़े हुए।

सघन पुलक,—यैन शिमुलेर तरू ।
कभु प्रफुल्लित अङ्ग, कभु हय सरू ॥७२॥

सघन पुलक,—ग्रैन शिमुलेर तरु ।
कभु प्रफुल्लित अङ्ग, कभु हय सरु ॥७२॥

स-घन—एक तार; **पुलक**—रौंगटे खड़े होना; **ग्रैन**—के प्रकार; **शिमुलेर तरु**—शिमुल

वृक्ष; **कभु**—किसी-किसी समय; **प्रफुल्लित**—फूला हुआ; **अङ्ग**—शरीर; **कभु**—किसी-किसी समय; **हय**—है; **सरु**—दुबला पतला।

अनुवाद

उनके शरीर के रोएँ खड़े हो गये, मानो शिमुल वृक्ष के काँटे हों। कभी उनका शरीर फूला हुआ दिखता, तो कभी अत्यन्त दुबला-पतला दिखता।

প্রতি রোম-কূপে হয় প্রস্বেদ, রক্তোদগম ।
'জজ' 'গগ' 'পরি' 'মুমু'—গদগদ বচন ॥৭৩॥

प्रति रोम-कूपे हय प्रस्वेद, रक्तोद्गम ।
'जज' 'गग' 'परि' 'मुमु'—गद्गद वचन ॥७३॥

प्रति रोम-कूपे—हरेक रोम के छिद्र में; **हय**—था; **प्रस्वेद**—स्वेद; **रक्त-उद्गम**—प्रचुरतापूर्वक रक्त बहा; **जज गग परि मुमु**—'जज गग परी मुमु' इस प्रकार बोलना; **गद्गद**—लड़खड़ाते हुए; **वचन**—शब्द।

अनुवाद

उनके शरीर के प्रत्येक रोमकूप से पसीना आ रहा था और रक्त निकल रहा था; उनकी वाणी लड़खड़ा रही थी। वे पंक्ति का ठीक से उच्चारण नहीं कर पा रहे थे। वे केवल "जज गग परि मुमु" ही उच्चारित कर पा रहे थे।

এক এক দন্ত যেন পৃথক্‌পৃথক্‌নড়ে ।
ঐছে নড়ে দন্ত,—যেন ভূমে খসি' পড়ে ॥৭৪॥

एक एक दन्त ग्रेन पृथक् पृथक् नड़े ।
ऐछे नड़े दन्त,—ग्रेन भूमे खसि' पड़े ॥७४॥

एक एक—हरेक; **दन्त**—दांत; **ग्रेन**—जैसेकि; **पृथक्-पृथक्**—अलग-अलग; **नड़े**—काँपे; **ऐछे**—इस प्रकार; **नड़े**—काँपे; **दन्त**—दांत; **ग्रेन**—जैसे कि; **भूमे**—भूमि पर; **खसि'**—ढीले होकर; **पड़े**—गिर पड़े।

अनुवाद

उनके सारे दाँत हिलने लगे, मानो एक दूसरे से अलग हों। ऐसा लग रहा था मानों वे सब भूमि पर गिर पड़ेंगे।

क्षणे क्षणे बाड़े प्रभुर आनन्द-आवेश ।
तृतीय प्रहर ह-इल, नृत्य नहे शेष ॥७५॥

क्षणे क्षणे बाड़े प्रभुर आनन्द-आवेश ।
तृतीय प्रहर ह-इल, नृत्य नहे शेष ॥ ७५ ॥

क्षणे क्षणे—हरेक क्षण; **बाड़े**—बढ़ता; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **आनन्द-आवेश**—दिव्य आनन्द; **तृतीय प्रहर**—दोपहर; **ह-इल**—था; **नृत्य**—नृत्य; **नहे शेष**—समाप्त न हुआ।

अनुवाद

उनका दिव्य आनन्द प्रति क्षण बढ़ता गया। अतः दोपहर के बाद भी उनका नृत्य समाप्त नहीं हुआ।

सब लोकेर उथलिल आनन्द-सागर ।
सब लोक पासरिल देह-आत्म-घर ॥७६॥

सब लोकेर उथलिल आनन्द-सागर ।
सब लोक पासरिल देह-आत्म-घर ॥ ७६ ॥

सब लोकेर—हरेक व्यक्ति का; **उथलिल**—उफन चला; **आनन्द-सागर**—दिव्य आनन्द के सागर में; **सब लोक**—हरेक व्यक्ति; **पासरिल**—भूल गया; **देह**—शरीर; **आत्म**—मन; **घर**—घर।

अनुवाद

दिव्य आनन्द का सागर उफन चला और वहाँ पर उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति अपना शरीर, मन तथा घर भूल गया।

तबे नित्यानन्द प्रभु सृजिला उपाय ।
क्रमे-क्रमे कीर्तनीया राखिल सबाय ॥७७॥

तबे नित्यानन्द प्रभु सृजिला उपाय ।
क्रमे-क्रमे कीर्तनीया राखिल सबाय ॥ ७७ ॥

तबे—उस समय; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **प्रभु**—भगवान्; **सृजिला उपाय**—एक उपाय खोजा; **क्रमे-क्रमे**—एक एक करके; **कीर्तनीया**—कीर्तन करनेवाले गायकों को; **राखिल**—ठहराया; **सबाय**—सभी।

अनुवाद

तब नित्यानन्द प्रभु ने कीर्तन को समाप्त करने की विधि ढूँढ निकाली। उन्होंने धीरे-धीरे सारे कीर्तनियों को रोक दिया।

স্বরূপের সঙ্গে মাত্র এক সম্প্রদায় ।
স্বরূপের সঙ্গে সেহ মন্দ-স্বর গায় ॥৭৮॥

स्वरूपेर सङ्गे मात्र एक सम्प्रदाय ।
स्वरूपेर सङ्गे सेह मन्द-स्वर गाय ॥ ७८ ॥

स्वरूपेर सङ्गे—स्वरूप दामोदर के संग; **मात्र**—मात्र; **एक**—एक; **सम्प्रदाय**—टोली; **स्वरूपेर सङ्गे**—स्वरूप दामोदर के संग; **सेह**—वे; **मन्द-स्वर**—अतिशय मन्द स्वर में; **गाय**—गाये।

अनुवाद

केवल एक टोली स्वरूप दामोदर के साथ कीर्तन करती रही। वह भी अत्यन्त मन्द स्वर से कीर्तन कर रही थी।

কোলাহল নাহি, প্রভুর কিছু বাহ্য হৈল ।
তবে নিত্যানন্দ সবার শ্রম জানাইল ॥৭৯॥

कोलाहल नाहि, प्रभुर किछु बाह्य हैल ।
तबे नित्यानन्द सबार श्रम जानाइल ॥ ७९ ॥

कोलाहल—उत्तेजित करनेवाली गूँज; **नाहि**—नहीं रही; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **किछु**—कुछ; **बाह्य**—बाह्य चेतना; **हैल**—हुई; **तबे**—उस समय; **नित्यानन्द**—नित्यानन्द प्रभु; **सबार**—उन सभी की; **श्रम**—थकान; **जानाइल**—की जानकारी दी।

अनुवाद

जब कोलाहल नहीं हो रहा था, तो श्री चैतन्य महाप्रभु की बाह्य चेतना लौटी। तब नित्यानन्द प्रभु ने उन्हें कीर्तनियों तथा नर्तकों की थकान के बारे में सूचित किया।

ভক্ত-শ্রম জানি' কৈলা কীর্তন সমাপন ।
সবা লঞা আসি' কৈলা সমুদ্রে স্নপন ॥৮০॥

भक्त-श्रम जानि' कैला कीर्तन समापन ।
सबा लञा आसि' कैला समुद्रे स्नपन ॥ ८० ॥

भक्त-श्रम—भक्तों का श्रम; **जानि'**—जानकर; **कैला**—किया; **कीर्तन समापन**—कीर्तन समाप्त; **सबा लञा आसि'**—उन सभी के संग; **कैला**—किया; **समुद्रे**—समुद्र में; **स्नपन**—स्नान।

अनुवाद

भक्तों की थकान समझकर श्री चैतन्य महाप्रभु ने संकीर्तन रोक दिया। तब उन्होंने सबों के साथ समुद्र में स्नान किया।

সব লঞা প্রভু কৈলা প্রসাদ ভোজন ।
সবারে বিদায় দিলা করিতে শয়ন ॥ ৮১ ॥
সব লঞা প্রভু কৈলা প্রসাদ ভোজন ।
সবারে বিদায় দিলা করিতে শয়ন ॥ ৮১ ॥

সব লঞা—উন সবকে সাথ; **প্রভু**—শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু; **কৈলা**—কিয়া; **প্রসাদ ভোজন**—প্রসাদ সেবন; **সবারে**—সব কো; **বিদায় দিলা**—বিদা করকে; **করিতে শয়ন**—বিশ্রাম করনে কে লিএ।

অনুবাদ

তব শ্রী চৈতন্য মহাপ্রভু ने उन सबों के साथ प्रसाद लिया और उनसे अपने-अपने निवासस्थान पर लौट जाने तथा आराम करने के लिए कहा।

গম্ভীরার দ্বারে করেন আপনে শয়ন ।
গোবিন্দ আসিয়া করে পাদ-সম্বাহন ॥ ৮২ ॥
গম্ভীরার দ্বারে করেন আপনে শয়ন ।
গোবিন্দ আসিয়া করে পাদ-সম্বাহন ॥ ৮২ ॥

গম্ভীরার দ্বারে—কমরে के भीतर गम्भीरा नामक कक्ष के द्वार पर; **करेन**—किया; **आपने**—स्वयं; **शयन**—लेटे; **गोविन्द**—उनका निजी सेवक गोविन्द; **आसिया**—आकर; **करे**—करे; **पाद-सम्वाहन**—पैरों की मालिश।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु गम्भीरा के द्वार पर लेट गये और गोविन्द वहाँ आकर महाप्रभु के पाँव दबाने लगा।

सर्व-काल आछे एई सुदृढ़ 'नियम' ।
'प्रभु यदि प्रसाद पाञा करेन शयन ॥८३॥
गोविन्द आसिया करे पाद-सम्वाहन ।
तबे याइ' प्रभुर 'शेष' करेन भोजन' ॥८४॥

सर्व-काल आछे एइ सुदृढ़ 'नियम' ।
'प्रभु यदि प्रसाद पाञा करेन शयन ॥८३॥
गोविन्द आसिया करे पाद-सम्वाहन ।
तबे याइ' प्रभुर 'शेष' करेन भोजन' ॥८४॥

सर्व-काल—हर समय; **आछे**—था; **एइ**—यह; **सु-दृढ़**—अपरिवर्तनीय; **नियम**—नियम; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **यदि**—जिस समय; **प्रसाद पाञा**—भोजन के पश्चात्; **करेन शयन**—लेटते; **गोविन्द**—गोविन्द; **आसिया**—आकर; **करे**—करता; **पाद-सम्वाहन**—पैरों की मालिश; **तबे**—तत्पश्चात्; **याइ'**—जाकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु के; **शेष**—भोजन के अवशेष; **करेन भोजन**—खाता।

अनुवाद

यह दीर्घकाल से चला आ रहा स्थायी नियम था कि भोजन के बाद श्री चैतन्य महाप्रभु विश्राम करने के लिए लेट जाते और गोविन्द आकर उनके पाँव दबाता। तब गोविन्द श्री चैतन्य महाप्रभु का शेष प्रसाद ग्रहण करता था।

सब द्वार युड़ि' प्रभु करियाछेन शयन ।
भितरे याइते नारे, गोविन्द करे निवेदन ॥८५॥

सब द्वार युड़ि' प्रभु करियाछेन शयन ।
भितरे याइते नारे, गोविन्द करे निवेदन ॥८५॥

सब द्वार—सम्पूर्ण द्वार; **युड़ि'**—ग्रहण करते हुए; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करियाछेन शयन**—लेटे थे; **भितरे**—भीतर; **याइते नारे**—जा न पाया; **गोविन्द**—गोविन्द; **करे निवेदन**—निवेदन किया।

अनुवाद

इस बार जब महाप्रभु लेटे, तो उन्होंने पूरा द्वार घेर लिया। इससे गोविन्द कमरे के भीतर न प्रवेश कर सका, अतएव उन्होंने निम्न प्रार्थना की।

'এক-পাশ হও, মোরে দেহ' ভিতর যাইতে' ।
প্রভু কহে,—'শক্তি নাহি অঙ্গ চালাইতে' ॥৮৬॥

'एक-पाश हओ, मोरे देह' भितर ग्राइते' ।
प्रभु कहे,—'शक्ति नाहि अङ्ग चालाइते' ॥८६॥

एक-पाश हओ—कृपया एक ओर घूमें; **मोरे**—मुझे; **देह'**—अनुमति दें; **भितर**—भीतर; **ग्राइते**—जाने की; **प्रभु कहे**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **शक्ति**—शक्ति; **नाहि**—नहीं; **अङ्ग चालाइते**—मेरा शरीर हिलाने की।

अनुवाद

गोविन्द ने कहा, "कृपया एक ओर करवट ले लें। मुझे कमरे में प्रवेश करने दें।" किन्तु महाप्रभु ने उत्तर दिया, "अपना शरीर हिलाने-डुलाने की मुझमें शक्ति नहीं है।"

বার বার গোবিন্দ কহে এক-দিক্ হ-ইতে ।
প্রভু কহে,—'অঙ্গ আমি নারি চালাইতে' ॥৮৭॥

बार बार गोविन्द कहे एक-दिक् ह-इते ।
प्रभु कहे,—'अङ्ग आमि नारि चालाइते' ॥८७॥

बार बार—बारम्बार; **गोविन्द**—गोविन्द; **कहे**—निवेदन करे; **एक-दिक् ह-इते**—एक ओर घूमने के लिए; **प्रभु कहे**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **अङ्ग**—मेरा शरीर; **आमि**—मैं; **नारि चालाइते**—हिला नहीं पा रहा।

अनुवाद

गोविन्द ने बारम्बार अनुरोध किया, किन्तु महाप्रभु ने उत्तर दिया, "मैं अपना शरीर हिला-डुला नहीं सकता।"

গোবিন্দ কহে,—'করিতে চাহি পাদ-সম্বাহন' ।
প্রভু কহে,—'কর বা না কর, যেই লয় তোমার মন' ॥ ৮৮॥
গোবিন্দ কহে,—'করিতে চাহি পাদ-সম্বাহন' ।
প্রভু কহে,—'কর বা না কর, যেই লয় তোমার মন' ॥ ৮৮॥

গোবিন্দ কহে—गोविन्द ने कहा; **করিতে**—करना; **চাহি**—मैं चाहु; **পাদ-সম্বাহন**—पैरों को दबाना; **প্রভু কহে**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया; **কর**—कर; **বা**—अन्यथा; **না কর**—न कर; **যেই**—जो कुछ; **লয় তোমার মন**—तुम चाहो।

अनुवाद

गोविन्द ने बारम्बार अनुरोध किया, "मैं आपके पाँव दबाना चाहता हूँ," किन्तु महाप्रभु ने कहा, "चाहे दबाओ या न दबाओ। यह सब तुम्हारे मन पर निर्भर है।"

তবে গোবিন্দ বহির্বাস তাঁর উপরে দিয়া ।
ভিতর-ঘরে গেলা মহাপ্রভুরে লঙ্ঘিয়া ॥ ৮৯॥
তবে গোবিন্দ বহির্বাস তাঁর উপরে দিয়া ।
ভিতর-ঘরে গেলা মহাপ্রভুরে লঙ্ঘিয়া ॥ ৮৯॥

তবে—फिर; **গোবিন্দ**—गोविन्द; **বহির্বাস**—बाहरी वस्त्र; **তাঁর উপরে**—उन पर; **দিয়া**—फैलाया; **ভিতর-ঘরে**—कक्ष के भीतर; **গেলা**—गया; **মহাপ্রভুরে লঙ্ঘিয়া**—श्री चैतन्य महाप्रभु को लाँघकर।

अनुवाद

तब गोविन्द ने महाप्रभु के शरीर पर चादर डाल दी और इस तरह वह उन्हें लाँघकर कमरे में प्रवेश कर गया।

পাদ-সম্বাহন কৈল, কটি-পৃষ্ঠ চাপিল ।
মধূর-মর্দনে প্রভুর পরিশ্রম গেল ॥ ৯০॥
পাদ-সম্বাহন কৈল, কটি-পৃষ্ঠ চাপিল ।
মধূর-মর্দনে প্রভুর পরিশ্রম গেল ॥ ৯০॥

পাদ-সম্বাহন—पैरों को दबाना; **কৈল**—उसने किया; **কটি**—कमर; **পৃষ্ঠ**—पीठ;

चापिल—दबाया; **मधूर-मर्दने**—मृदुलता से दबाया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **परिश्रम**—थकावट; **गेल**—दूर हो गई।

अनुवाद

गोविन्द ने हमेशा की तरह महाप्रभु के पाँव दबाये। उसने महाप्रभु की कमर तथा पीठ हल्के से दबाई और इस तरह महाप्रभु की थकान दूर हो गई।

सुखे निद्रा हैल प्रभुर, गोविन्द चापे अङ्ग ।
दण्ड-दुइ ब-इ प्रभुर हैला निद्रा-भङ्ग ॥९१॥

सुखे निद्रा हैल प्रभुर, गोविन्द चापे अङ्ग ।
दण्ड-दुइ ब-इ प्रभुर हैला निद्रा-भङ्ग ॥ ९१ ॥

सुखे—अच्छी तरह से; **निद्रा हैल प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु सो गये; **गोविन्द**—गोविन्द; **चापे अङ्ग**—शरीर को दबाया; **दण्ड-दुइ ब-इ**—लगभग पैंतालीस मिनट के बाद; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **हैला**—हुआ; **निद्रा-भङ्ग**—निद्रा टूटना।

अनुवाद

जब गोविन्द ने उनका शरीर दबाया, तो महाप्रभु लगभग ४५ मिनट तक अच्छी तरह सोये और तब उनकी नींद टूटी।

गोविन्दे देखिया प्रभु बले क्रुद्ध हञा ।
'आजि केने एत-क्षण आछिस्वसिया? ॥९२॥

गोविन्दे देखिया प्रभु बले क्रुद्ध हञा ।
'आजि केने एत-क्षण आछिस् वसिया? ॥ ९२ ॥

गोविन्दे देखिया—गोविन्द को देखकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने; **बले**—कहा; **क्रुद्ध हञा**—क्रोधित होकर; **आजि**—आज; **केने**—क्यों; **एत-क्षण**—इतने समय तक; **आछिस्**—तुम रहे हो; **वसिया**—बैठे।

अनुवाद

जब महाप्रभु ने गोविन्द को अपनी बगल में बैठे देखा, तो वे कुछ नाराज हुए और पूछा, "तुम आज इतनी देर तक यहाँ क्यों बैठे रहे हो?"

মোর নিদ্রা হৈলে কেনে না গেলা প্রসাদ খাইতে?' ।
গোবিন্দ কহে—'দ্বারে শুইলা, যাইতে নাহি পথে' ॥৯৩॥
মোর নিদ্রা হৈলে কেনে না গেলা প্রসাদ খাইতে?' ।
গোবিন্দ কহে—'দ্বারে শুইলা, যাইতে নাহি পথে' ॥ ৯৩ ॥

মোর নিদ্রা হৈলে—মৈं निद्राव्यवस्था में था; **কেনে**—क्यों; **না গেলা**—नहीं गया; **প্রসাদ খাইতে**—प्रसाद सेवन करने; **গোবিন্দ কহে**—गोविन्द ने कहा; **দ্বারে**—द्वार; **শুইলা**—आप रोक रहे थे; **যাইতে**—जाना; **নাহি পথে**—मार्ग नहीं था।

अनुवाद

महाप्रभु ने पूछा, "मेरे सो जाने के बाद तुम प्रसाद ग्रहण करने क्यों नहीं गये?" गोविन्द ने उत्तर दिया, "आप द्वार रोककर लेटे हुए थे और जाने के लिए कोई रास्ता न था।"

প্রভু কহে,—'ভিতরে তবে আইলা কেমনে? ।
তৈছে কেনে প্রসাদ লৈতে না কৈলা গমনে?' ॥৯৪॥
প্রভু কহে,—'ভিতরে তবে আইলা কেমনে? ।
তৈছে কেনে প্রসাদ লৈতে না কৈলা গমনে?' ॥ ৯৪ ॥

প্রভু কহে—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **ভিতরে**—भीतर; **তবে**—उस समय; **আইলা**—तुम आये; **কেমনে**—किस प्रकार; **তৈছে**—उसी प्रकार; **কেনে**—क्यों; **প্রসাদ লৈতে**—प्रसाद सेवन करने; **না কৈলা গমনে**—नहीं गये।

अनुवाद

महाप्रभु ने पूछा, "तुमने कमरे में प्रवेश कैसे किया? उसी तरह से तुम भोजन करने बाहर क्यों नहीं गये?"

গোবিন্দ কহে মনে—"আমার 'সেবা' সে 'নিয়ম' ।
অপরাধ হ-উক, কিবা নরকে গমন ॥৯৫॥
গোবিন্দ কহে মনে—"আমার 'সেবা' সে 'নিয়ম' ।
অপরাধ হ-উক, কিবা নরকে গমন ॥ ৯৫ ॥

গোবিন্দ কহে—गोविन्द ने कहा; **মনে**—मन में; **আমার সেবা**—मेरी सेवा; **সে নিয়ম**—

यह नियम है; **अपराध ह-उक**—अपराध क्यों न हो; **किबा**—या; **नरके**—नर्क में; **गमन**—जाना।

अनुवाद

गोविन्द ने मन ही मन उत्तर दिया, "मेरा कर्तव्य तो सेवा करना है, चाहे मुझे अपराध करना पड़े या नरक जाना पड़े।

'सेवा' लागि' कोटि 'अपराध' नाहि गणि ।
स्व-निमित्त 'अपराधाभासे' भय मानि'' ॥९६॥

'सेवा' लागि' कोटि 'अपराध' नाहि गणि ।
स्व-निमित्त 'अपराधाभासे' भय मानि" ॥ ९६ ॥

सेवा लागि'—सेवा के लिए; **कोटि अपराध**—करोड़ों अपराध; **नाहि गणि**—मुझे चिन्ता नहीं; **स्व-निमित्त**—स्वयं के लिए; **अपराध-आभासे**—अपराध के आभास से; **भय मानि**—मुझे भय है।

अनुवाद

"यदि महाप्रभु की सेवा के लिए मुझे करोड़ों अपराध करने पड़ें, तो भी मैं बुरा नहीं मानूँगा, किन्तु मैं अपने लिए एक अपराध की झलक से भी अत्यधिक डरता हूँ।"

एत सब मने करि' गोविन्द रहिला ।
प्रभु ये पुछिला, तार उत्तर ना दिला ॥९७॥

एत सब मने करि' गोविन्द रहिला ।
प्रभु ये पुछिला, तार उत्तर ना दिला ॥ ९७ ॥

एत सब—यह सब; **मने करि'**—मन में सोचकर; **गोविन्द रहिला**—गोविन्द चुप रहा; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ये**—क्या; **पुछिला**—पूछा; **तार**—उसका; **उत्तर**—उत्तर; **ना दिला**—नहीं दिया।

अनुवाद

इस तरह सोचकर गोविन्द मौन रहा। उसने महाप्रभु के प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया।

प्रत्यह प्रभुर निद्राय यान प्रसाद ल-इते ।
से दिवसेर श्रम देखि' लागिला चापिते ॥ ९८ ॥

प्रत्यह प्रभुर निद्राय ग्यान प्रसाद ल-इते ।
से दिवसेर श्रम देखि' लागिला चापिते ॥ ९८ ॥

प्रति-अह—प्रतिदिन; **प्रभुर निद्राय**—प्रभु की निद्रावस्था के समय; **ग्यान**—वह जाता था; **प्रसाद ल-इते**—प्रसाद सेवन करने; **से दिवसेर**—उस दिन; **श्रम**—थकावट; **देखि'**—देखकर; **लागिला चापिते**—मलने लगा।

अनुवाद

गोविन्द का अभ्यास था कि वह तब भोजन करता, जब महाप्रभु सोये होते। किन्तु उस दिन महाप्रभु की थकावट देखकर गोविन्द उनके शरीर को दबाता रहा।

याइतेह पथ नाहि, याइबे केमने? ।
महा-अपराध हय प्रभुर लङ्घने ॥ ९९ ॥

ग्याइतेह पथ नाहि, ग्याइबे केमने? ।
महा-अपराध हय प्रभुर लङ्घने ॥ ९९ ॥

ग्याइतेह—जाने के लिए; **पथ नाहि**—मार्ग न था; **ग्याइबे केमने**—कैसे जाता; **महा-अपराध**—महान् अपराध; **हय**—होता; **प्रभुर लङ्घने**—श्री चैतन्य महाप्रभु के शरीर को लाँघना।

अनुवाद

चूँकि जाने के लिए कोई रास्ता न था, अतः वह कैसे जाता? जब उसने महाप्रभु के शरीर को लाँघने का सोचा, तो उसे लगा कि यह बहुत बड़ा अपराध है।

एइ सब हय भक्ति-शास्त्र-सूक्ष्म मर्म ।
चैतन्येर कृपाय जाने एइ सब धर्म ॥ १०० ॥

एइ सब हय भक्ति-शास्त्र-सूक्ष्म मर्म ।
चैतन्येर कृपाय जाने एइ सब धर्म ॥ १०० ॥

एइ सब—यह सब; **हय**—है; **भक्ति-शास्त्र**—भक्ति शास्त्र; **सूक्ष्म मर्म**—सूक्ष्म नियम;

चैतन्येर कृपाय—श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से; **जाने**—व्यक्ति समझ सकता है; **एइ सब**—यह सब; **धर्म**—भक्ति के नियम।

अनुवाद

भक्ति में ये सब शिष्टाचार की सूक्ष्म बातें हैं। जिसने श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा प्राप्त की है, केवल वही इन तत्त्वों को समझ सकता है।

तात्पर्य

कर्मीजन भक्ति के सूक्ष्म तत्त्वों को नहीं समझ सकते, क्योंकि वे भक्ति के विधिविधान-परक महत्त्व को ही स्वीकार करते हैं, किन्तु यह नहीं जानते कि भक्ति किस तरह भगवान् को तुष्ट करती है। कर्मीजन औपचारिक क्रियाओं को धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष में उन्नति करने का साधन मानते हैं। यद्यपि ये धर्म का पालन करने के भौतिक परिणाम मात्र हैं, किन्तु कर्मीजन इन्हें ही सब कुछ मानते हैं। ये अनुष्ठान कर्म कहलाते हैं। जो कर्मी भक्ति को शिथिलतापूर्वक ग्रहण करते हैं और इस तरह भौतिक कर्म के स्तर पर बने रहते हैं, वे *प्राकृत सहजिया* कहलाते हैं। वे यह नहीं समझ पाते कि वात्सल्य तथा माधुर्य प्रेम में किस तरह शुद्ध भक्ति की जाती है, क्योंकि इसे वही शुद्ध भक्त समझ सकता है, जिस पर श्री चैतन्य महाप्रभु की विशेष कृपा होती है।

भक्त-गुण प्रकाशिते प्रभु बड़ रङ्गी ।
एइ सब प्रकाशिते कैला एत भङ्गी ॥१०१॥

भक्त-गुण प्रकाशिते प्रभु बड़ रङ्गी ।
एइ सब प्रकाशिते कैला एत भङ्गी ॥१०१॥

भक्त-गुण—भक्तों के गुण; **प्रकाशिते**—प्रकट होना; **प्रभु**—प्रभु; **बड़ रङ्गी**—बहुत उत्साहित; **एइ सब**—यह सब; **प्रकाशिते**—प्रकट होना; **कैला**—उन्होंने प्रदर्शित किया; **एत**—इस प्रकार की; **भङ्गी**—घटना।

अनुवाद

महाप्रभु अपने भक्तों के उच्च गुणों को प्रकट करने में अत्यधिक रुचि रखते हैं और यही कारण है कि उन्होंने इस घटना को घटने दिया।

সঙ্ক্ষেপে কহিলুঁ এই পরি-মুণ্ডা-নৃত্য ।
অদ্যাপিহ গায় যাহা চৈতন্যের ভৃত্য ॥১০২॥

সঙ্ক্ষেপে কহিলুঁ এই পরি-মুণ্ডা-নৃত্য ।
অদ্যাপিহ গায় যাহা চৈতন্যের ভৃত্য ॥১০২॥

सङ्क्षेपे—संक्षिप्त में; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **एइ**—यह; **परि-मुण्डा-नृत्य**—जगन्नाथ मन्दिर के कक्ष में किया गया नृत्य; **अद्यापिह**—आज तक; **गाय**—गाए; **याहा**—इसे; **चैतन्येर भृत्य**—श्री चैतन्य महाप्रभु के सेवक।

अनुवाद

इस तरह मैंने जगन्नाथ मन्दिर के सभा भवन में श्री चैतन्य महाप्रभु के नृत्य करने का संक्षिप्त वर्णन किया है। श्री चैतन्य महाप्रभु के सेवक अब भी इस नृत्य का गुणगान करते हैं।

এই-মত মহাপ্রভু লঞা নিজ-গণ ।
গুণ্ডিচা-গৃহের কৈলা ক্ষালন, মার্জন ॥১০৩॥

এই-মত মহাপ্রভু লঞা নিজ-গণ ।
গুণ্ডিচা-গৃহের কৈলা ক্ষালন, মার্জন ॥১০৩॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **लञा निज-गण**—अपने व्यक्तिगत सहयोगीयों के साथ; **गुण्डिचा-गृहेर**—गुंडीचा मन्दिर; **कैला**—प्रदर्शित किया; **क्षालन**—धोना; **मार्जन**—शुद्ध करना।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने हमेशा की तरह अपने निजी संगियों के साथ गुण्डिचा मन्दिर की धुलाई तथा सफाई की।

পূর্ববত্কৈলা প্রভু কীর্তন, নর্তন ।
পূর্ববত্টোটায় কৈলা বন্য-ভোজন ॥১০৪॥

পূর্ববত্ কৈলা প্রভু কীর্তন, নর্তন ।
পূর্ববত্ টোটায় কৈলা বন্য-ভোজন ॥১০৪॥

पूर्व-वत्—पहले की तरह; **कैला**—प्रदर्शित किया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **कीर्तन**—

कीर्तन; **नर्तन**—नृत्य; **पूर्व-वत्**—जैसे पहले; **टोटाय**—बाग में; **कैला**—किया; **वन्य-भोजन**—भोज।

अनुवाद

महाप्रभु ने पहले की ही तरह नृत्य और कीर्तन किया और तब बगीचे में भोजन किया।

पूर्ववत्रथ-आगे करिला नर्तन ।
हेरा-पञ्चमी-यात्रा कैला दरशन ॥ १०५॥

पूर्ववत् रथ-आगे करिला नर्तन ।
हेरा-पञ्चमी-यात्रा कैला दरशन ॥ १०५॥

पूर्व-वत्—पहले की तरह; **रथ-आगे**—रथ के सामने; **करिला नर्तन**—नृत्य किया; **हेरा-पञ्चमी-यात्रा**—हेरा पंचमी का उत्सव; **कैला दरशन**—उन्होंने देखा।

अनुवाद

उन्होंने पहले ही की तरह जगन्नाथजी के रथ के आगे नृत्य किया और हेरा पंचमी उत्सव मनाया।

चारि-मास वर्षाय रहिला सब भक्त-गण ।
जन्माष्टमी आदि यात्रा कैला दरशन ॥ १०६॥

चारि-मास वर्षाय रहिला सब भक्त-गण ।
जन्माष्टमी आदि यात्रा कैला दरशन ॥ १०६॥

चारि-मास—चार महीनों के लिए; **वर्षाय**—वर्षा ऋतु के; **रहिला**—रहे; **सब भक्त-गण**—सभी भक्त; **जन्माष्टमी आदि यात्रा**—जन्माष्टमी इत्यादि त्योहार; **कैला दरशन**—मनाया।

अनुवाद

बंगाल से आये सारे भक्त वर्षा-ऋतु के चार महीने तक जगन्नाथपुरी में रहे और उन्होंने कृष्ण जन्माष्टमी तथा अन्य अनेक उत्सव मनाये।

पूर्वे यदि गौड़ ह-इते भक्त-गण आइल ।
प्रभुरे किछु खाओयाइते सबार इच्छा हैल ॥ १०७॥

पूर्वे ग्रदि गौड़ ह-इते भक्त-गण आइल ।
प्रभुरे किछु खाओयाइते सबार इच्छा हैल ॥ १०७॥

पूर्वे—पूर्व काल में; **ग्रदि**—जब; **गौड़ ह-इते**—बंगाल से; **भक्त-गण आइल**—भक्त पहुँचे; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **किछु**—कुछ; **खाओयाइते**—भोजन कराने की; **सबार इच्छा हैल**—सबकी इच्छा हुई।

अनुवाद

पहले जब बंगाल से सारे भक्त आये थे, तो उनकी इच्छा थी कि श्री चैतन्य महाप्रभु को खाने के लिए कोई न कोई वस्तु दें।

কেহ কোন প্রসাদ আনি' দেয় গোবিন্দ-ঠাঞি ।
'ইহা যেন অবশ্য ভক্ষণ করেন গোসাঞি' ॥ ১০৮॥

केह कोन प्रसाद आनि' देय गोविन्द-ठाञि ।
'इहा ग्रेन अवश्य भक्षण करेन गोसाञि' ॥ १०८॥

केह—कोई; **कोन प्रसाद**—भिन्न प्रकार का प्रसाद; **आनि'**—लाया; **देय**—पहुँचाया; **गोविन्द-ठाञि**—गोविन्द को; **इहा**—यह; **ग्रेन**—कि; **अवश्य**—अवश्य; **भक्षण करेन**—खायें; **गोसाञि**—श्री चैतन्य महाप्रभु।

अनुवाद

हर भक्त कोई न कोई प्रसाद लाता। वह इसे इस विनती के साथ गोविन्द को सौंपता कि, "कृपया ऐसा करें कि महाप्रभु इस प्रसाद को अवश्य खायें।"

কেহ পৈড়, কেহ নাড়ু, কেহ পিঠা-পানা ।
বহু-মূল্য উত্তম-প্রসাদ-প্রকার যার নানা ॥ ১০৯॥

केह पैड़, केह नाड़ु, केह पिठा-पाना ।
बहु-मूल्य उत्तम-प्रसाद-प्रकार ग्रार नाना ॥ १०९॥

केह—कोई; **पैड़**—पैड़ा (नारियल से बना पदार्थ); **केह**—कोई; **नाड़ु**—लड्डू; **केह**—कोई; **पिठा**—पिठा; **पाना**—मीठे चावल; **बहु-मूल्य**—बहुमूल्य; **उत्तम-प्रसाद**—अत्यन्त स्वादिष्ट भोजन; **प्रकार ग्रार नाना**—भिन्न भिन्न प्रकार का।

अनुवाद

कोई पैड़ (नारियल का एक व्यंजन), तो कोई लड्डू, तथा कोई पिष्टक (पिठा) तथा खीर ले आया। यह प्रसाद तरह-तरह का था और बहुमूल्य था।

'अमुकेइ दिया़छे' गोविन्द करे निवेदन ।
'धरि' राख' बलि' प्रभु ना करेन भक्षण ॥ ११०॥

'अमुकेइ दियाछे' गोविन्द करे निवेदन ।
'धरि' राख' बलि' प्रभु ना करेन भक्षण ॥ ११०॥

अमुक्—अमुक भक्त; **एइ**—यह; **दियाछे**—दिया है; **गोविन्द**—गोविन्द; **करे निवेदन**—बताये; **धरि' राख**—कृपया इन्हें स्वीकार करें; **बलि'**—कहकर; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ना करेन भक्षण**—सेवन न किया।

अनुवाद

गोविन्द प्रसाद को श्री चैतन्य महाप्रभु के सामने रखता और कहता, "इसे अमुक भक्त ने दिया है।" किन्तु महाप्रभु उसे वास्तव में खाते नहीं थे। वे केवल इतना ही कहते, "इसे कमरे में रख दो।"

धरिते धरिते घरेर भरिल एक कोण ।
शत-जनेर भक्ष्य यत हैल सङ्कयन ॥ १११॥

धरिते धरिते घरेर भरिल एक कोण ।
शत-जनेर भक्ष्य यत हैल सञ्चयन ॥ १११॥

धरिते धरिते—रखते रखते; **घरेर**—कमरे का; **भरिल**—भर गया; **एक कोण**—एक कोना; **शत-जनेर**—एक सौ लोगों को; **भक्ष्य**—खिलाने के लिए पर्याप्त; **यत**—सब; **हैल**—था; **सञ्चयन**—संग्रहण।

अनुवाद

गोविन्द इस खाद्य सामग्री को संचित करता रहा, अतः जल्दी ही कमरे का एक कोना भर गया। यह सामग्री कम से कम एक सौ लोगों के भोजन के लिए पर्याप्त थी।

গোবিন্দেরে সবে পুছে করিয়া যতন ।
'আমা-দত্ত প্রসাদ প্রভুরে কি করাইলা ভক্ষণ? ॥১১২॥

गोविन्देरे सबे पुछे करिया यतन ।
'आमा-दत्त प्रसाद प्रभुरे कि कराइला भक्षण? ॥ ११२ ॥

गोविन्देरे—गोविन्द को; **सबे**—सभी भक्त; **पुछे**—पूछते; **करिया यतन**—अत्यन्त उत्साहपूर्वक; **आमा-दत्त प्रसाद**—मैंने दिया हुआ प्रसाद; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **कि कराइला भक्षण**—सेवन करने दिया?

अनुवाद

सारे भक्त अत्यन्त उत्सुकता से गोविन्द से पूछते, "क्या आपने मेरे द्वारा लाया हुआ प्रसाद श्री चैतन्य महाप्रभु को दिया?"

কাহাঁ কিছু কহি' গোবিন্দ করে বঞ্চন ।
আর দিন প্রভুরে কহে নির্বেদ-বচন ॥১১৩॥

काहाँ किछु कहि' गोविन्द करे वञ्चन ।
आर दिन प्रभुरे कहे निर्वेद-वचन ॥ ११३ ॥

काहाँ—किसी को; **किछु**—कुछ; **कहि'**—कहकर; **गोविन्द**—गोविन्द; **करे वञ्चन**—झूठ कहता; **आर दिन**—एक दिन; **प्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **कहे**—कहा; **निर्वेद-वचन**—निराशापूर्वक।

अनुवाद

जब भक्तगण गोविन्द से पूछते, तो उसे उनसे झूठ बोलना पड़ता। इसलिए एक दिन उसने निराश होकर महाप्रभु से कहा।

"আচার্যাদি মহাশয় করিয়া যতনে ।
তোমারে খাওয়াইতে বস্তু দেন মোর স্থানে ॥১১৪॥

"आचार्य्यादि महाशय करिया यतने ।
तोमारे खाओयाइते वस्तु देन मोर स्थाने ॥ ११४ ॥

आचार्य्य-आदि—अद्वैत आचार्य के नेतृत्व में; **महाशय**—सम्माननीय सज्जन; **करिया यतने**—बहुत प्रयास करके; **तोमारे खाओयाइते**—आपको खिलाने के लिए; **वस्तु देन**—विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ; **मोर स्थाने**—मुझे।

अनुवाद

"अद्वैत आचार्य इत्यादि अनेक सम्माननीय भक्त आपके लिए तरह-तरह का भोजन मुझे सौंपने के लिए बड़ा प्रयास करते हैं।

তুমি সে না খাও, তাঁরা পুছে বার বার ।
কত বঞ্চনা করিমু, কেমনে আমার নিস্তার?'' ॥ ১১৫ ॥

তুমি সে না খাও, তাঁরা পুছে বার বার ।
কত বঞ্চনা করিমু, কেমনে আমার নিস্তার?" ॥ ১১৫ ॥

तुमि—आप; **से**—यह; **ना खाओ**—नहीं खाते हैं; **ताँरा**—वे; **पुछे**—पूछते हैं; **बार बार**—बारम्बार; **कत वञ्चना करिमु**—कब तक मैं छलुं; **केमने**—कैसे; **आमार**—मेरी; **निस्तार**—मुक्ति।

अनुवाद

"आप उसे नहीं खाते हैं, किन्तु वे मुझसे बारम्बार पूछते रहते हैं। मैं कब तक उन्हें ठगता रहूँगा? मैं इस उत्तरदायित्व से कब छुटकारा पा सकूँगा?"

প্রভু কহে,—'আদি-বস্যা' দুঃখ কাঁহে মানে? ।
কেবা কি দিয়াছে, তাহা আনহ এখানে ॥ ১১৬ ॥

প্রভু কহে,—'আদি-বস্যা' দুঃখ কাঁহে মানে? ।
কেবা কি দিয়াছে, তাহা আনহ এখানে ॥ ১১৬ ॥

प्रभु कहे—महाप्रभु ने उत्तर दिया; **आदि-वस्या**—तुम जो मेरे साथ बहुत समय से निवास कर रहे हो; **दुःख काँहे माने**—तुम इस पर दुःखी क्यों हो?; **केबा कि दियाछे**—उन्होंने जो कुछ दिया है; **ताहा**—वह सब; **आनह एखाने**—इधर लाओ।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने उत्तर दिया, "तुम मूर्ख की तरह क्यों इतने दुःखी हो? उन लोगों ने तुम्हें जो दिया है, उसे मेरे पास ले आओ।"

तात्पर्य

श्रील भक्तिविनाद ठाकुर बतलाते हैं कि *आदि-वस्या शब्द* उस व्यक्ति का

द्योतक है, जो किसी के साथ दीर्घकाल से रह रहा हो। गोविन्द को *आदिवस्या* कहकर इसलिए सम्बोधित किया गया, क्योंकि वह महाप्रभु के साथ दीर्घकाल से रह रहा था, जबकि अन्य भक्त जो अधिकतर नये थे, आते-जाते रहते थे। वस्तुतः महाप्रभु ने गोविन्द से कहा, "चूँकि तुम मेरे साथ दीर्घकाल से रह रहे हो, अतएव तुम्हें इस बात के लिए मूर्ख की तरह निराश नहीं होना चाहिए। तुम सारा भोजन ले आओ और तुम देखोगे कि मैं उसे खा सकता हूँ।"

এত বলি' মহাপ্রভু বসিলা ভোজনে ।
নাম ধরি' ধরি' গোবিন্দ করে নিবেদনে ॥ ১১৭ ॥

এত বলি' মহাপ্রভু বসিলা ভোজনে ।
নাম ধরি' ধরি' গোবিন্দ করে নিবেদনে ॥ ११७ ॥

এত বলি'—यह कहकर; **মহাপ্রভু**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **বসিলা ভোজনে**—खाने के लिए बैठे; **নাম**—नाम; **ধরি' ধরি'**—कहकर (बताकर); **গোবিন্দ**—गोविन्द; **করে নিবেদনে**—प्रदान करे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु खाने बैठ गये। तब गोविन्द उन्हें एक-एक करके सारे पकवान देने लगा और साथ ही देने वाले का नाम भी बताता गया।

"আচার্যের এই পৈড়, পানা-সর-পূপী ।
এই অমৃত-গুটিকা, মণ্ডা, কর্পূর-কূপী ॥ ১১৮ ॥

"আচার্য্যের এइ পৈড়, পানা-সর-পূপী ।
এइ অমৃত-গুটিকা, মণ্ডা, কর্পূর-কূপী ॥ ११८ ॥

আচার্য্যের—अद्वैत आचार्य ने; **এइ**—यह; **পৈড়**—पैड़ा; **পানা**—खीर; **সর-পূপী**—मलाई से बने रोट; **এइ**—ये; **অমৃত-গুটিকা**—मिठाई; **মণ্ডা**—गोलाकार मिठाई; **কর্পূর-কূপী**—कपूर से भरा मटका (पात्र)।

अनुवाद

"पैड़, खीर, मलाई के बने रोट तथा अमृत गुटिका, मण्डा एवं कपूर का पात्र-ये सारी वस्तुएँ अद्वैत आचार्य द्वारा दी गई हैं।

श्रीवास-पण्डितेर एই অনেক প্রকার ।
পিঠা, পানা, অমৃত-মণ্ডা পদ্ম-চিনি আর ॥ ১১৯॥

শ্রীবাস-পণ্ডিতের এই অনেক প্রকার ।
পিঠা, পানা, অমৃত-মণ্ডা পদ্ম-চিনি আর ॥ ১১৯॥

শ্রীবাস-পণ্ডিতের—শ্রীবাস পণ্ডিত के; **এই**—ये; **অনেক প্রকার**—अनेक प्रकार; **পিঠা**—रोट; **পানা**—मलाई; **অমৃত-মণ্ডা**—एक प्रकार की मिठाई; **পদ্ম-চিনি**—पद्म चिनि; **আর**—एवं।

अनुवाद

"इसके बाद श्रीवास पण्डित द्वारा दी गई खाद्य सामग्रियाँ हैं—रोट, मलाई, अमृतमण्डा तथा पद्मचिनि।

আচার্যরত্নের এই সব উপহার ।
আচার্যনিধির এই, অনেক প্রকার ॥ ১২০॥

আচার্যরত্নের এই সব উপহার ।
আচার্যনিধির এই, অনেক প্রকার ॥ ১২০॥

আচার্যরত্নের—चन्द्रशेखर के; **এই**—ये; **সব**—सब; **উপহার**—उपहार; **আচার্যনিধির**—आचार्यनिधी के; **এই**—ये; **অনেক প্রকার**—अनेक प्रकार के।

अनुवाद

"ये सारे उपहार आचार्यरत्न के हैं और ये तरह-तरह के उपहार आचार्य निधि द्वारा दिये गये हैं।

বাসুদেব-দত্তের এই মুরারি-গুপ্তের আর ।
বুদ্ধিমন্ত-খাঁনের এই বিবিধ প্রকার ॥ ১২১॥

বাসুদেব-দত্তের এই মুরারি-গুপ্তের আর ।
বুদ্ধিমন্ত-খাঁনের এই বিবিধ প্রকার ॥ ১২১॥

বাসুদেব-দত্তের—वासुदेव दत्त का; **এই**—ये; **মুরারি-গুপ্তের**—मुरारी गुप्त का; **আর**—एवं; **বুদ্ধিমন্ত-খাঁনের**—बुद्धिमन्त खान के; **এই**—ये; **বিবিধ প্রকার**—विभिन्न प्रकार के।

अनुवाद

"ये नाना प्रकार की खाद्य वस्तुएँ वासुदेव दत्त, मुरारि गुप्त तथा बुद्धिमन्त खान द्वारा दी गई हैं।

শ্রীমান্সেন, শ্রীমান্পণ্ডিত, আচার্য-নন্দন ।
তাঁ-সবার দত্ত এই করহ ভোজন ॥১২২॥

श्रीमान् सेन, श्रीमान् पण्डित, आचार्य्य-नन्दन ।
ताँ-सबार दत्त एइ करह भोजन ॥१२२॥

श्रीमान्-सेन—श्रीमान सेन; **श्रीमान्-पण्डित**—श्रीमान पण्डित; **आचार्य्य-नन्दन**—आचार्य नन्दन; **ताँ-सबार**—सभी का; **दत्त**—दिया हुआ; **एइ**—ये; **करह भोजन**—कृपया भोजन करें।

अनुवाद

"ये उपहार श्रीमान सेन, श्रीमान पण्डित तथा आचार्य नन्दन द्वारा दिये गये हैं। कृपया इन सबों को खायें।

কুলীন-গ্রামের এই আগে দেখ যত ।
খণ্ড-বাসী লোকের এই দেখ তত'' ॥১২৩॥

कुलीन-ग्रामेर एइ आगे देख यत ।
खण्ड-वासी लोकेर एइ देख तत" ॥१२३॥

कुलीन-ग्रामेर—कुलीन ग्राम के निवासी; **एइ**—ये; **आगे**—पहले; **देख**—देखा; **यत**—सब; **खण्ड-वासी लोकेर**—खण्ड के निवासी का; **एइ**—ये; **देख**—देखा; **तत**—बहुत सारा।

अनुवाद

"ये वस्तुएँ कुलीनग्राम के निवासियों द्वारा बनाई हुई हैं और इन वस्तुओं को खण्ड के निवासियों ने बनाई हैं।"

ঐছে সবার নাম লঞা প্রভুর আগে ধরে ।
সন্তুষ্ট হঞা প্রভু সব ভোজন করে ॥১২৪॥

ऐछे सबार नाम लञा प्रभुर आगे धरे ।
सन्तुष्ट हञा प्रभु सब भोजन करे ॥१२४॥

ऐछे—इस प्रकार; **सबार नाम**—सबका नाम; **लञा**—लेकर; **प्रभुर आगे**—प्रभु के आगे; **धरे**—रखा; **सन्तुष्ट हञा**—सन्तुष्ट होकर; **प्रभु**—प्रभु; **सब**—सब; **भोजन करे**—खाने लगे।

अनुवाद

इस तरह गोविन्द ने महाप्रभु के सामने भोजन रखते हुए हर एक का नाम लिया। अत्यन्त सन्तुष्ट होकर महाप्रभु सारी वस्तुएँ खाने लगे।

यद्यपि मासेकेर बासि मुकुता नारिकेल ।
अमृत-गुटिकादि, पानादि सकल ॥ १२५ ॥
तथापि नूतन-प्राय सब द्रव्येर स्वाद ।
'बासि' विस्वाद नहे सेइ प्रभुर प्रसाद ॥ १२६ ॥

यद्यपि मासेकेर वासि मुकुता नारिकेल ।
अमृत-गुटिकादि, पानादि सकल ॥ १२५ ॥
तथापि नूतन-प्राय सब द्रव्येर स्वाद ।
'वासि' विस्वाद नहे सेइ प्रभुर प्रसाद ॥ १२६ ॥

यद्यपि—यद्यपि; **मासेकेर**—एक मास; **वासि**—शेष रहा; **मुकुता नारिकेल**—नारियल से बना कड़क और मीठा पदार्थ; **अमृत-गुटिका**—अमृत गुटिका; **आदि**—आदि; **पाना**—मीठा रस; **आदि**—इत्यादि; **सकल**—सब; **तथापि**—तथापि; **नूतन-प्राय**—मानो ताजा; **सब द्रव्येर**—सब खाद्य पदार्थ का; **स्वाद**—स्वाद; **वासि**—बासी; **विस्वाद**—बेस्वाद; **नहे**—नहीं था; **सेइ**—यह; **प्रभुर प्रसाद**—महाप्रभु की कृपा।

अनुवाद

मुकुता नारिकेल, अमृत गुटिका, अनेक प्रकार के मीठे पेय तथा अन्य पदार्थ कम से कम एक मास पहले के बने हुए थे। यद्यपि वे पुराने थे, किन्तु बेस्वाद या बासी नहीं हुए थे। निस्सन्देह, वे सभी ताजे बने रहे थे। यही श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा है।

शत-जनेर भक्ष्य प्रभु दण्डेके खाइला! ।
'आर किछु आछे?' बलि' गोविन्दे पुछिला ॥ १२७ ॥

शत-जनेर भक्ष्य प्रभु दण्डेके खाइला! ।
'आर किछु आछे?' बलि' गोविन्दे पुछिला ॥ १२७ ॥

शत-जनेर—एक सौ लोगों का; **भक्ष्य**—खाद्य पदार्थ; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **दण्डेके खाइला**—चौबीस मीनटों में भोजन कर लिया; **आर किछु आछे**—और कुछ है; **बलि'**—कहकर; **गोविन्दे**—गोविन्द को; **पुछिला**—पूछा।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने अल्पकाल में ही सौ लोगों के लिए पर्याप्त भोजन खा लिया। तब उन्होंने गोविन्द से पूछा, "क्या अब भी कोई चीज बची है?"

গোবিন্দ বলে,—'রাঘবের ঝালি মাত্র আছে' ।
প্রভু কহে,—'আজি রহু, তাহা দেখিমু পাছে' ॥১২৮॥

गोविन्द बले,—'राघवेर झालि मात्र आछे' ।
प्रभु कहे,—'आजि रहु, ताहा देखिमु पाछे' ॥ १२८ ॥

गोविन्द बले—गोविन्द ने उत्तर दिया; **राघवेर झालि**—राघव के दिये गये थैले; **मात्र**—मात्र; **आछे**—हैं; **प्रभु कहे**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **आजि**—आज; **रहु**—रहने दो; **ताहा**—यह; **देखिमु**—मैं देखूँगा; **पाछे**—बाद में।

अनुवाद

गोविन्द ने उत्तर दिया, "अब केवल राघव के थैले बचे हैं।" महाप्रभु ने कहा, "आज उन्हें रहने दो। मैं उन्हें बाद में देखूँगा।"

আর দিন প্রভু যদি নিভৃতে ভোজন কৈলা ।
রাঘবের ঝালি খুলি' সকল দেখিলা ॥১২৯॥

आर दिन प्रभु यदि निभृते भोजन कैला ।
राघवेर झालि खुलि' सकल देखिला ॥ १२९ ॥

आर दिन—अगले दिन; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **यदि**—जब; **निभृते**—एकान्त में; **भोजन कैला**—भोजन किया; **राघवेर**—राघव पण्डित के; **झालि**—थैले; **खुलि'**—खोलकर; **सकल देखिला**—सब देखा।

अनुवाद

अगले दिन जब महाप्रभु एकान्त स्थान में भोजन कर रहे थे, तब उन्होंने राघव के थैले खोले और एक-एक करके उनके भीतर देखा।

सब द्रव्येर किछु किछु उपयोग कैला ।
स्वादु, सुगन्धि देखि' बहु प्रशंसिला ॥ १३० ॥

सब द्रव्येर किछु किछु उपयोग कैला ।
स्वादु, सुगन्धि देखि' बहु प्रशंसिला ॥ १३० ॥

सब द्रव्येर—सभी पदार्थ; **किछु किछु**—कुछ कुछ; **उपयोग कैला**—खाया; **स्वादु**—स्वादिष्ट; **सु-गन्धि**—सुगन्धित; **देखि'**—देखकर; **बहु**—अत्यन्त; **प्रशंसिला**—प्रशंसा की।

अनुवाद

उन्होंने उनमें से हर वस्तु को थोड़ा-थोड़ा चखा और उनके स्वाद तथा गन्ध की प्रशंसा की।

वत्सरेक तरे आर राखिला धरिया ।
भोजन-काले स्वरूप परिवेशे खसाञा ॥ १३१ ॥

वत्सरेक तरे आर राखिला धरिया ।
भोजन-काले स्वरूप परिवेशे खसाञा ॥ १३१ ॥

वत्सरेक—एक वर्ष; **तरे**—के लिए; **आर**—शेष; **राखिला धरिया**—भण्डार में रखा; **भोजन-काले**—भोजन के समय; **स्वरूप**—स्वरूप दामोदर गोस्वामी; **परिवेशे**—व्यवस्था करते थे; **खसाञा**—थोड़ा-थोड़ा देना।

अनुवाद

फिर बचे विभिन्न प्रकार के प्रसाद को वर्ष भर खाने के लिए रख दिया गया। जब श्री चैतन्य महाप्रभु भोजन करते, तब स्वरूप दामोदर गोस्वामी इसे थोड़ा-थोड़ा करके परोसते।

कभु रात्रि-काले किछु करेन उपयोग ।
भक्तेर श्रद्धार द्रव्य अवश्य करेन उपभोग ॥ १३२ ॥

कभु रात्रि-काले किछु करेन उपयोग ।
भक्तेर श्रद्धार द्रव्य अवश्य करेन उपभोग ॥ १३२ ॥

कभु—कभी; **रात्रि-काले**—रात्रि काल में; **किछु**—कुछ; **करेन उपयोग**—उपयोग किया; **भक्तेर**—भक्तों के; **श्रद्धार**—श्रद्धा; **द्रव्य**—पदार्थ; **अवश्य**—अवश्य; **करेन उपभोग**—उपभोग करें।

अनुवाद

कभी-कभी महाप्रभु इसमें से कुछ भाग को रात में खाते। महाप्रभु अपने भक्तों द्वारा श्रद्धा तथा प्रेम से प्रस्तुत की गई वस्तुओं का निश्चय ही भोग करते हैं।

तात्पर्य

कृष्ण अपने भक्तों तथा उनकी भेंटों से अत्यधिक प्रसन्न होते हैं। इसलिए *भगवद्गीता* (९.२६) में वे कहते हैं :

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति।
तदहं भक्त्युपहृतम् अश्नामि प्रयतात्मनः ॥

"यदि कोई प्रेम तथा श्रद्धा से मुझे एक पत्ती, फूल, फल या जल प्रदान करता है, तो मैं उसे स्वीकार करता हूँ।" यहाँ भी हम देखते हैं कि श्री चैतन्य महाप्रभु ने सारा भोजन स्वीकार किया, क्योंकि यह उनके भक्तों द्वारा अर्पित किया गया था। कभी वे दिन में खाते और कभी रात में, किन्तु वे सदैव यही सोचा करते कि चूँकि इसे उनके भक्तों ने बड़े प्रेम तथा स्नेह से दिया है, अतएव उन्हें उसे खाना चाहिए।

এই-মত মহাপ্রভু ভক্ত-গণ-সঙ্গে ।
চাতুর্মাস্য গোঙাইলা কৃষ্ণ-কথা-রঙ্গে ॥ ১৩৩॥

एइ-मत महाप्रभु भक्त-गण-सङ्गे ।
चातुर्मास्य गोङाइला कृष्ण-कथा-रङ्गे ॥ १३३॥

एइ-मत—इस प्रकार; **महाप्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भक्त-गण-सङ्गे**—उनके व्यक्तिगत भक्तों के साथ; **चातुर्मास्य गोङाइला**—वर्षा ऋतु के चार महीने बिताये; **कृष्ण-कथा-रङ्गे**—कृष्ण कथा वर्णित करने के सुख में।

अनुवाद

इस तरह महाप्रभु ने अपने भक्तों के साथ कृष्ण कथा की चर्चा करते हुए चातुर्मास की सारी अवधि सुखपूर्वक बिताई।

মধ্যে মধ্যে আচার্যাদি করে নিমন্ত্রণ ।
ঘরে ভাত রান্ধে আর বিবিধ ব্যঞ্জন ॥১৩৪॥

मध्ये मध्ये आचार्य्यादि करे निमन्त्रण ।
घरे भात रान्धे आर विविध व्यञ्जन ॥ १३४॥

मध्ये मध्ये—अन्तराल में; **आचार्य्य-आदि**—अद्वैत आचार्य इत्यादि; **करे निमन्त्रण**—निमन्त्रण देते; **घरे**—घर में; **भात**—चावल; **रान्धे**—पकाये; **आर**—तथा; **विविध व्यञ्जन**—विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ।

अनुवाद

समय-समय पर अद्वैत आचार्य तथा अन्य भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु को घर में पकाया चावल तथा नाना प्रकार की सब्जियाँ खाने के लिए निमन्त्रित करते रहते।

मरिचेर झाल, आर मधुराम्ल आर ।
आदा, लवण, लेम्बु, दुग्ध, दधि, खण्ड-सार ॥ १३५॥
शाक दुइ-चारि, आर सुकुतार झोल ।
निम्ब-वार्ताकी, आर भृष्ट-पटोल ॥ १३६॥

मरिचेर झाल—काली मिर्च से बना तीखा पदार्थ; **आर**—एवं; **मधुराम्ल**—खट्टा-मीठा पदार्थ; **आर**—इसके साथ; **आदा**—अदरक; **लवण**—नमकीन पदार्थ; **लेम्बु**—निंबु; **दुग्ध**—दूध; **दधि**—दही; **खण्ड-सार**—पनीर; **शाक दुइ-चारि**—दो चार प्रकार की पालक; **आर**—एवं; **सुकुतार झोल**—खरबूज से बना झोल; **निम्ब-वार्ताकी**—निंब के पत्तो के मिश्रण के साथ बैंगन; **आर**—एवं; **भृष्ट-पटोल**—तला हुआ पटोल।

अनुवाद

उन्होंने काली मिर्च से बनी तीखी वस्तुएँ, मीठे तथा खट्टे व्यंजन, अदरक, नमकीन, नींबू, दूध, दही, पनीर, दो-चार तरह की शाक-सब्जियाँ, सुकुता से बना सूप, नीम के फूलों से मिश्रित बैंगन तथा तला हुआ पटोल खाने को दिया।

ভৃষ্ট ফুল-বড়ী, আর মুদগ-ডালি-সূপ ।
বিবিধ ব্যঞ্জন রান্ধে প্রভুর রুচি-অনুরূপ ॥ ১৩৭ ॥

भृष्ट फुल-बड़ी, आर मुद्‌ग-डालि-सूप ।
विविध व्यञ्जन रान्धे प्रभुर रुचि-अनुरूप ॥ १३७ ॥

भृष्ट—तला हुआ; **फुल-बड़ी**—दाल से बना पदार्थ; **आर**—एवं; **मुद्‌ग-डालि-सूप**—मुंग दाल से बनी तरल वस्तु; **विविध व्यञ्जन**—विभिन्न प्रकार की सब्जी; **रान्धे**—पकाते थे; **प्रभुर रुचि-अनुरूप**—श्री चैतन्य महाप्रभु को अत्यन्त स्वादिष्ट लगती थी।

अनुवाद

उन्होंने फुलबड़ी, मूँग की दाल तथा अनेक तरकारियाँ दीं, जो महाप्रभु के स्वाद के अनुकूल पकाई गई थीं।

জগন্নাথের প্রসাদ আনে করিতে মিশ্রিত ।
কাহাঁ একা যায়েন, কাহাঁ গণের সহিত ॥ ১৩৮ ॥

जगन्नाथेर प्रसाद आने करिते मिश्रित ।
काहाँ एका याय़ेन, काहाँ गणेर सहित ॥ १३८ ॥

जगन्नाथेर—जगन्नाथ भगवान् के; **प्रसाद**—प्रसाद; **आने**—लाकर; **करिते मिश्रित**—मिश्रण करते थे; **काहाँ**—कहीं; **एका याय़ेन**—अकेले जाते; **काहाँ**—कहीं; **गणेर सहित**—भक्तों के साथ।

अनुवाद

वे इन खाद्यान्नों के साथ जगन्नाथजी का प्रसाद मिला देते। जब श्री चैतन्य महाप्रभु निमन्त्रण स्वीकार करते, तो कभी वे अकेले जाते और कभी अपने संगियों के साथ जाते।

আচার্যরত্ন, আচার্যনিধি, নন্দন, রাঘব ।
শ্রীবাস-আদি যত ভক্ত, বিপ্র সব ॥ ১৩৯ ॥

आचार्य्यरत्न, आचार्य्यनिधि, नन्दन, राघव ।
श्रीवास-आदि य़त भक्त, विप्र सब ॥ १३९ ॥

आचार्य्यरत्न—आचार्यरत्न; **आचार्य्यनिधि**—आचार्यनिधि; **नन्दन**—नन्दन आचार्य;

राघव—राघव पण्डित; **श्रीवास-आदि**—श्रीवास आदि; **ग्रत भक्त**—सभी भक्त; **विप्र सब**—सभी ब्राह्मण।

अनुवाद

आचार्यरत्न, आचार्यनिधि, नन्दन आचार्य, राघव पण्डित तथा श्रीवास जैसे सारे के सारे भक्त ब्राह्मण जाति के थे।

एइ-मत निमन्त्रण करेन यत्न करि ।
वासुदेव, गदाधर-दास, गुप्त-मुरारि ॥ १४०॥
कुलीन-ग्रामी, खण्ड-वासी, आर यत जन ।
जगन्नाथेर प्रसाद आनि' करे निमन्त्रण ॥ १४१॥

एइ-मत निमन्त्रण करेन ग्रत्न करि ।
वासुदेव, गदाधर-दास, गुप्त-मुरारि ॥ १४०॥
कुलीन-ग्रामी, खण्ड-वासी, आर ग्रत जन ।
जगन्नाथेर प्रसाद आनि' करे निमन्त्रण ॥ १४१॥

एइ-मत—इस प्रकार; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण; **करेन**—दिया; **ग्रत्न करि**—प्रेम से; **वासुदेव**—वासुदेव; **गदाधर-दास**—गदाधर दास; **गुप्त-मुरारि**—मुरारी गुप्त; **कुलीन-ग्रामी**—कुलीन ग्राम के निवासी; **खण्ड-वासी**—खण्ड के निवासी; **आर**—एवं; **ग्रत जन**—अन्य लोग; **जगन्नाथेर प्रसाद**—जगन्नाथ का प्रसाद; **आनि'**—लाकर; **करे निमन्त्रण**—निमन्त्रण दिया।

अनुवाद

वे महाप्रभु को निमन्त्रण दिया करते। वासुदेव दत्त, गदाधर दास, मुरारि गुप्त, कुलीन ग्राम तथा खण्ड ग्राम के वासी एवं अन्य अनेक भक्त, जो ब्राह्मण जाति के नहीं थे, भगवान् जगन्नाथ को अर्पित भोजन खरीदा करते और तब श्री चैतन्य महाप्रभु को निमन्त्रित किया करते।

तात्पर्य

न तो कुलीन ग्राम के निवासी, जैसे कि सत्यराज खान तथा रामानन्द वसु, जाति के ब्राह्मण थे, न ही मुकुन्द दास, नरहरि दास तथा रघुनन्दन जैसे खण्ड के निवासी ब्राह्मण जाति के थे। इसलिए वे बाजार से प्रसाद खरीदा करते, जहाँ जगन्नाथ के भोजन का शेष बेचा जाता और तब वे श्री चैतन्य महाप्रभु को

निमन्त्रित करते, जबकि आचार्यरत्न, आचार्यनिधि आदि जो जाति के ब्राह्मण थे, वे घर पर भोजन बनाते और महाप्रभु को निमन्त्रित करते। चैतन्य महाप्रभु उस समय के समाज में प्रचलित मर्यादा का पालन केवल ब्राह्मण जाति के लोगों द्वारा पकाया भोजन प्रसाद के रूप में ग्रहण करके करते, किन्तु सिद्धान्ततः वे अपने भक्तों का निमन्त्रण स्वीकार करते, भले ही वे ब्राह्मण न हों।

शिवानन्द-सेनेर शुन निमन्त्रणाख्यान ।
शिवानन्देर बड़-पुत्रेर 'चैतन्य-दास' नाम ॥ १४२॥
शिवानन्द-सेनेर शुन निमन्त्रणाख्यान ।
शिवानन्देर बड़-पुत्रेर 'चैतन्य-दास' नाम ॥ १४२॥

शिवानन्द-सेनेर—शिवानन्द सेन का; **शुन**—सुनो; **निमन्त्रण-आख्यान**—निमन्त्रण की कथा; **शिवानन्देर**—शिवानन्द सेन के; **बड़-पुत्रेर**—ज्येष्ठ पुत्र; **चैतन्य-दास नाम**—चैतन्य दास नामक।

अनुवाद

अब शिवानन्द सेन द्वारा महाप्रभु को दिये गये निमन्त्रण के बारे में सुनें। उनके ज्येष्ठ पुत्र का नाम चैतन्य दास था।

प्रभुरे मिलाइते ताँरे सङ्गेइ आनिला ।
मिलाइले, प्रभु ताँर नाम त' पुछिला ॥ १४३॥
प्रभुरे मिलाइते ताँरे सङ्गेइ आनिला ।
मिलाइले, प्रभु ताँर नाम त' पुछिला ॥ १४३॥

प्रभुरे मिलाइते—प्रभु से परिचय करना; **ताँरे**—उसे (चैतन्य दास); **सङ्गेइ**—संग; **आनिला**—लाये; **मिलाइले**—जब परिचय कराया; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **ताँर**—उसका; **नाम**—नाम; **त'**—उस पर; **पुछिला**—पूछा।

अनुवाद

जब शिवानन्द सेन अपने पुत्र चैतन्य दास को महाप्रभु से परिचय कराने के लिए लाये, तब महाप्रभु ने उनसे उनका नाम पूछा।

'चैतन्य-दास' नाम शुनि' कहे गौर-राय ।
'किबा नाम धराञाछ, बुझन ना याय' ॥ १४४॥

'चैतन्य-दास' नाम शुनि' कहे गौर-राय ।
'किबा नाम धराञाछ, बुझन ना याय' ॥ १४४॥

चैतन्य-दास—चैतन्य दास; **नाम**—नाम; **शुनि'**—सुनकर; **कहे गौर-राय**—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **किबा**—क्या; **नाम**—नाम; **धराञाछ**—तुमने दिया; **बुझन ना याय**—समझ न आया।

अनुवाद

जब महाप्रभु ने सुना कि उसका नाम चैतन्य दास है, तो उन्होंने कहा, "तुमने इसका कैसा नाम रखा है? इसे समझना बहुत कठिन है।"

सेन कहे,—'ये जानिलुँ, सेइ नाम धरिल' ।
एत बलि' महाप्रभुरे निमन्त्रण कैल ॥ १४५॥

सेन कहे,—'ये जानिलुँ, सेइ नाम धरिल' ।
एत बलि' महाप्रभुरे निमन्त्रण कैल ॥ १४५॥

सेन कहे—शिवानन्द सेन ने कहा; **ये जानिलुँ**—मैं जो जानता था; **सेइ नाम**—वह नाम; **धरिल**—रखा; **एत बलि'**—यह कहकर; **महाप्रभुरे**—श्री चैतन्य महाप्रभु को; **निमन्त्रण कैल**—निमन्त्रण दिया।

अनुवाद

शिवानन्द सेन ने उत्तर दिया, "उसका जो नाम रखा गया है, वह मेरे भीतर से उत्पन्न हुआ।" तब उन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु को भोजन के लिए निमन्त्रित किया।

जगन्नाथेर बहु-मूल्य प्रसाद आनाइला ।
भक्त-गणे लञा प्रभु भोजने बसिला ॥ १४६॥

जगन्नाथेर बहु-मूल्य प्रसाद आनाइला ।
भक्त-गणे लञा प्रभु भोजने बसिला ॥ १४६॥

जगन्नाथेर—जगन्नाथ भगवान् का; **बहु-मूल्य**—बहुमूल्य; **प्रसाद**—प्रसाद; **आनाइला**—

लाया; **भक्त-गणे**—भक्तगण; **लञा**—के संग; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **भोजने वसिला**—प्रसाद सेवन करने बैठे।

अनुवाद

शिवानन्द सेन भगवान् जगन्नाथ का बहुमूल्य प्रसाद खरीद लाये थे। उसे वे भीतर ले आये और श्री चैतन्य महाप्रभु को दिया, जो अपने संगियों सहित प्रसाद पाने के लिए बैठ गये।

শিবানন্দের গৌরবে প্রভু করিলা ভোজন ।
অতি-গুরু-ভোজনে প্রভুর প্রসন্ন নহে মন ॥১৪৭॥

शिवानन्देर गौरवे प्रभु करिला भोजन ।
अति-गुरु-भोजने प्रभुर प्रसन्न नहे मन ॥१४७॥

शिवानन्देर—शिवानन्द सेन के; **गौरवे**—गौरव से; **प्रभु**—श्री चैतन्य महाप्रभु; **करिला भोजन**—भोजन किया; **अति-गुरु-भोजने**—अधिक भोजन करके; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **प्रसन्न नहे मन**—मन असन्तुष्ट था।

अनुवाद

शिवानन्द सेन की महिमा के कारण श्री चैतन्य महाप्रभु ने उनके आग्रह पर सभी प्रकार के प्रसाद का भोजन किया। किन्तु महाप्रभु आवश्यकता से अधिक खा गये, जिससे उनका मन असन्तुष्ट था।

আর দিন চৈতন্য-দাস কৈলা নিমন্ত্রণ ।
প্রভুর 'অভীষ্ট' বুঝি' আনিলা ব্যঞ্জন ॥১৪৮॥

आर दिन चैतन्य-दास कैला निमन्त्रण ।
प्रभुर 'अभीष्ट' बुझि' आनिला व्यञ्जन ॥१४८॥

आर दिन—अगले दिन; **चैतन्य-दास**—शिवानन्द सेन के पुत्र ने; **कैला निमन्त्रण**—निमन्त्रित किया; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु की; **अभीष्ट**—इच्छा; **बुझि'**—समझकर; **आनिला व्यञ्जन**—विभिन्न व्यंजन लाये।

अनुवाद

अगले दिन शिवानन्द सेन के पुत्र चैतन्य दास ने महाप्रभु को निमन्त्रण

दिया। किन्तु वह महाप्रभु के मन को समझ चुके थे, इसलिए उन्होंने भिन्न प्रकार के भोजन की व्यवस्था की।

दधि, लेम्बु, आदा, आर फुल-बड़ा, लवण ।
सामग्री देखिया प्रभुर प्रसन्न हैल मन ॥ १४९॥

दधि, लेम्बु, आदा, आर फुल-बड़ा, लवण ।
सामग्री देखिया प्रभुर प्रसन्न हैल मन ॥ १४९॥

दधि—दही; **लेम्बु**—निंबु; **आदा**—अदरक; **आर**—एवं; **फुल-बड़ा**—दाल से बना; **लवण**—नमक; **सामग्री देखिया**—यह सामग्री देखकर; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का; **प्रसन्न**—प्रसन्न; **हैल**—हुए; **मन**—मन में।

अनुवाद

उन्होंने दही, नींबू, अदरक, मुलायम बड़े तथा नमक लाकर दिया। यह प्रबन्ध देखकर श्री चैतन्य महाप्रभु अत्यन्त प्रसन्न हुए।

तात्पर्य

श्री चैतन्य महाप्रभु की कृपा से चैतन्य दास ने महाप्रभु के मन की बात जान ली। इसलिए उन्होंने ऐसे भोजन की व्यवस्था की, जो पिछले दिन के गरिष्ठ भोजन का निराकरण कर सके।

आगे चलकर चैतन्य दास संस्कृत के विद्वान बने और उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं। उनकी पुस्तकों में से *कृष्ण कर्णामृत* का भाष्य अत्यन्त प्रसिद्ध है। एक अन्य पुस्तक *चैतन्य-चरितामृत* कहलाती है, जो संस्कृत काव्य है। कहा जाता है कि इसकी रचना भी उन्होंने की।

प्रभु कहे,—"एइ बालक आमार मत जाने ।
सन्तुष्ट ह-इलाँ आमि इहार निमन्त्रणे" ॥ १५०॥

प्रभु कहे,—"एइ बालक आमार मत जाने ।
सन्तुष्ट ह-इलाँ आमि इहार निमन्त्रणे" ॥ १५०॥

प्रभु कहे—श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा; **एइ बालक**—यह बालक; **आमार मत**—मेरा मन; **जाने**—समझता है; **सन्तुष्ट ह-इलाँ**—सन्तुष्ट हूँ; **आमि**—मैं; **इहार निमन्त्रणे**—इसके निमन्त्रण से।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु ने कहा, "यह बालक मेरा मन जानता है। अतएव उसका निमन्त्रण स्वीकार करने से मैं अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ।"

এত বলি' দধি-ভাত করিলা ভোজন ।
চৈতন্য-দাসেরে দিলা উচ্ছিষ্ট-ভাজন ॥ ১৫১ ॥

এত বলি' দধি-ভাত করিলা ভোজন ।
চৈতন্য-দাসেরে দিলা উচ্ছিষ্ট-ভাজন ॥ ১৫১ ॥

এত বলি'—यह कहकर; **দধি-ভাত**—दही चावल; **করিলা ভোজন**—भोजन किया; **চৈতন্য-দাসেরে**—चैतन्य दास को; **দিলা**—उन्होंने दिया; **উচ্ছিষ্ট-ভাজন**—उनका शेष।

अनुवाद

यह कहकर महाप्रभु ने चावल और दही को मिला लिया और चैतन्य दास को अपने भोजन का शेष दिया।

চারি-মাস এই-মত নিমন্ত্রণে যায় ।
কোন কোন বৈষ্ণব 'দিবস' নাহি পায় ॥ ১৫২ ॥

চারি-মাস এই-মত নিমন্ত্রণে যায় ।
কোন কোন বৈষ্ণব 'দিবস' নাহি পায় ॥ ১৫২ ॥

চারি-মাস—चार महीनों तक; **এই-মত**—इस प्रकार; **নিমন্ত্রণে যায়**—श्री चैतन्य महाप्रभु उनके निमन्त्रण स्वीकार करते; **কোন কোন বৈষ্ণব**—कुछ कुछ वैष्णवों को; **দিবস**—दिन; **নাহি পায়**—न मिला।

अनुवाद

इस तरह भक्तों के आमन्त्रण स्वीकार करते हुए चातुर्मास बीत गया। किन्तु निमन्त्रणों की बाढ़ के कारण कुछ वैष्णवों को खाली दिन न मिल सका, जब वे महाप्रभु को बुला सकते।

গদাধর-পণ্ডিত, ভট্টাচার্য সার্বভৌম ।
ইঁহা সবার আছে ভিক্ষার দিবস-নিয়ম ॥ ১৫৩ ॥

गदाधर-पण्डित, भट्टाचार्य्य सार्वभौम ।
इँहा सबार आछे भिक्षार दिवस-नियम ॥ १५३ ॥

गदाधर-पण्डित—गदाधर पण्डित; **भट्टाचार्य्य सार्वभौम**—सार्वभोम भट्टाचार्य; **इँहा सबार**—यह सब व्यक्ति; **आछे**—हैं; **भिक्षार**—निमन्त्रण स्वीकार करने; **दिवस-नियम**—हर महीने।

अनुवाद

गदाधर पण्डित तथा सार्वभौम भट्टाचार्य ने तो वे तिथियाँ तय कर दी थीं, जब प्रति मास श्री चैतन्य महाप्रभु उनका निमन्त्रण स्वीकार करते।

गोपीनाथाचार्य, जगदानन्द, काशीश्वर ।
भगवान्, रामभद्राचार्य, शङ्कर, वक्रेश्वर ॥ १५४ ॥
मध्ये मध्ये घर-भाते करे निमन्त्रण ।
अन्येर निमन्त्रणे प्रसादे कौड़ि दुई-पण ॥ १५५ ॥

गोपीनाथाचार्य्य, जगदानन्द, काशीश्वर ।
भगवान्, रामभद्राचार्य्य, शङ्कर, वक्रेश्वर ॥ १५४ ॥
मध्ये मध्ये घर-भाते करे निमन्त्रण ।
अन्येर निमन्त्रणे प्रसादे कौड़ि दुइ-पण ॥ १५५ ॥

गोपीनाथ-आचार्य्य—गोपीनाथ आचार्य; **जगदानन्द**—जगदानन्द पण्डित; **काशीश्वर**—काशीश्वर; **भगवान्**—भगवान्; **रामभद्र-आचार्य्य**—रामभद्र आचार्य; **शङ्कर**—शंकर; **वक्रेश्वर**—वक्रेश्वर; **मध्ये मध्ये**—अन्तराल में; **घर-भाते**—घर में चावल बनाकर; **करे निमन्त्रण**—निमन्त्रित करते; **अन्येर निमन्त्रण**—दुसरों को निमन्त्रण करने; **प्रसादे**—प्रसाद; **कौड़ि दुइ-पण**—शंख के दो पण (१६० शंख)।

अनुवाद

गोपीनाथ आचार्य, जगदानन्द, काशीश्वर, भगवान्, रामभद्राचार्य, शंकर तथा वक्रेश्वर—ये सभी ब्राह्मण थे, जिन्होंने श्री चैतन्य महाप्रभु को निमन्त्रण दिया और घर पर पकाया भोजन प्रदान किया, जबकि अन्य भक्त दो पण का जगन्नाथजी का प्रसाद खरीदकर महाप्रभु को निमन्त्रित करते।

প্রথমে আছিল 'নির্বন্ধ' কৌড়ি চারি-পণ ।
রামচন্দ্র-পুরী-ভয়ে ঘাটাইলা নিমন্ত্রণ ॥১৫৬॥

प्रथमे आछिल 'निर्बन्ध' कौड़ि चारि-पण ।
रामचन्द्र-पुरी-भये घाटाइला निमन्त्रण ॥ १५६ ॥

प्रथमे—प्रारम्भ में; **आछिल**—था; **निर्बन्ध**—निर्धारित; **कौड़ि चारि-पण**—शंख के चार पण; **रामचन्द्र-पुरी-भये**—रामचन्द्र पुरी के; **घाटाइला**—कम हुए; **निमन्त्रण**—निमन्त्रण का।

अनुवाद

पहले जगन्नाथ प्रसाद का मूल्य चार पण कौड़ियाँ था, किन्तु जब रामचन्द्र पुरी वहाँ था, तब यह मूल्य कम करके आधा हो गया था।

চারি-মাস রহি' গৌড়ের ভক্তে বিদায় দিলা ।
নীলাচলের সঙ্গী ভক্ত সঙ্গেই রহিলা ॥১৫৭॥

चारि-मास रहि' गौड़ेर भक्ते विदाय दिला ।
नीलाचलेर सङ्गी भक्त सङ्गेइ रहिला ॥ १५७ ॥

चारि-मास रहि'—चार महीनों तक रहकर; **गौड़ेर भक्ते**—बंगाल से आये गौड़िया भक्तों को; **विदाय दिला**—विदा किया; **नीलाचलेर सङ्गी**—जगन्नाथ पुरी में सहयोगी; **भक्त**—भक्त; **सङ्गेइ**—के संग; **रहिला**—रहे।

अनुवाद

बंगाल से आये भक्त श्री चैतन्य महाप्रभु के साथ चार महीनों तक लगातार रहे और तब महाप्रभु ने उन्हें विदा दी। बंगाली भक्तों के चले जाने पर जो भक्त जगन्नाथ पुरी में महाप्रभु के साथ रहने वाले थे, वे उनके साथ रहे।

এই ত' কহিলুঁ প্রভুর ভিক্ষা-নিমন্ত্রণ ।
ভক্ত-দত্ত বস্তু যৈছে কৈলা আস্বাদন ॥১৫৮॥

एइ त' कहिलुँ प्रभुर भिक्षा-निमन्त्रण ।
भक्त-दत्त वस्तु यैछे कैला आस्वादन ॥ १५८ ॥

एइ त'—इस प्रकार; **कहिलुँ**—मैंने वर्णन किया है; **प्रभुर**—श्री चैतन्य महाप्रभु का;

भिक्षा-निमन्त्रण—भोजन के लिए निमन्त्रण; **भक्त-दत्त**—भक्तों द्वारा प्रस्तुत किया गया; **वस्तु**—वस्तु; **ग्रैछे**—जैसे; **कैला आस्वादन**—उन्होंने आस्वादन किया।

अनुवाद

इस तरह मैंने इसका वर्णन किया है कि महाप्रभु ने किस-किस तरह अपने भक्तों के निमन्त्रण स्वीकार किये और उनके द्वारा अर्पित प्रसाद का आस्वादन किया।

তার মধ্যে রাঘবের ঝালি-বিবরণ ।
তার মধ্যে পরি-মুণ্ডা-নৃত্য-কথন ॥ ১৫৯॥

तार मध्ये राघवेर झालि-विवरण ।
तार मध्ये परि-मुण्डा-नृत्य-कथन ॥ १५९॥

तार मध्ये—उसके दौरान; **राघवेर**—राघव पण्डित के; **झालि-विवरण**—भोजन के थैलों का वर्णन; **तार मध्ये**—उसके साथ साथ; **परि-मुण्डा-नृत्य-कथन**—जगन्नाथ के मन्दिर में किये गये नृत्य का वर्णन।

अनुवाद

उस कथा के बीच में राघव पण्डित के भोजन की थैलियों एवं जगन्नाथ मन्दिर में नृत्य का वर्णन आया है।

শ্রদ্ধা করি' শুনে যেই চৈতন্যের কথা ।
চৈতন্য-চরণে প্রেম পাইবে সর্বথা ॥ ১৬০॥

श्रद्धा करि' शुने ग्रेइ चैतन्येर कथा ।
चैतन्य-चरणे प्रेम पाइबे सर्वथा ॥ १६०॥

श्रद्धा करि'—अत्यन्त आस्था एवं प्रेम के साथ; **शुने**—सुने; **ग्रेइ**—जो व्यक्ति; **चैतन्येर कथा**—श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं का वर्णन; **चैतन्य-चरणे**—श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमल; **प्रेम**—प्रेम; **पाइबे**—निश्चित रूप से पायेगा; **सर्वथा**—अवश्य।

अनुवाद

जो व्यक्ति श्रद्धा तथा प्रेमपूर्वक श्री चैतन्य महाप्रभु की लीलाओं के विषय में सुनता है, वह निश्चय ही श्री चैतन्य महाप्रभु के चरणकमलों के प्रति आनन्दमय प्रेम को प्राप्त करेगा।

শুনিতে অমৃত-সম জুড়ায় কর্ণ-মন ।
সেই ভাগ্যবান্, যেই করে আস্বাদন ॥ ১৬১ ॥

शुनिते अमृत-सम जुड़ाय कर्ण-मन ।
सेइ भाग्यवान्, येइ करे आस्वादन ॥ १६१ ॥

शुनिते—सुनने में; **अमृत-सम**—अमृत के समान; **जुड़ाय कर्ण-मन**—कर्ण और मन को सन्तुष्ट करता है; **सेइ भाग्यवान्**—वह अत्यन्त सौभाग्यशाली है; **येइ**—जो; **करे आस्वादन**—आस्वादन करे।

अनुवाद

श्री चैतन्य महाप्रभु के कार्यकलापों की कथाएँ सुनने में अमृत-तुल्य हैं। वे कानों तथा मन दोनों को तुष्ट करने वाली हैं। जो भी इन कार्यकलापों के अमृत का आस्वादन करता है, वह निश्चय ही बड़ा भाग्यशाली है।

শ্রী-রূপ-রঘুনাথ-পদে যার আশ ।
চৈতন্য-চরিতামৃত কহে কৃষ্ণদাস ॥ ১৬২ ॥

श्री-रूप-रघुनाथ-पदे यार आश ।
चैतन्य-चरितामृत कहे कृष्णदास ॥ १६२ ॥

श्री-रूप—श्रील रूप गोस्वामी; **रघुनाथ**—श्रील रघुनाथ दास गोस्वामी; **पदे**—चरणकमल; **यार**—जिनके; **आश**—अपेक्षा; **चैतन्य-चरितामृत**—चैतन्य चरितामृत; **कहे**—कहे; **कृष्णदास**—श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी।

अनुवाद

श्री रूप तथा श्री रघुनाथ के चरणकमलों की वन्दना करते हुए तथा उनकी कृपा की सदैव कामना करते हुए, उनके चरणचिह्नों पर चलकर मैं कृष्णदास श्री चैतन्य-चरितामृत का वर्णन कर रहा हूँ।

इस प्रकार श्रीचैतन्य-चरितामृत अन्त्य लीला के अन्तर्गत श्री चैतन्य महाप्रभु का भक्तों से प्रसाद-ग्रहण शीर्षक दसवें अध्याय का भक्तिवेदान्त तात्पर्य पूर्ण हुआ।